कमल संदेश

ikf{kd if=dk

संपादक

प्रभात झा, सांसद

कार्यकारी संपादक

डॉ. शिवशक्ति बक्सी

संपादक मंडल

सत्यपाल

संजीव कुमार सिन्हा

कला संपादक

धर्मेन्द्र कौशल

विकास सैनी

सदस्यता शुल्क

वार्षिक : 100/-

त्रि वार्षिक : 250/-

संपर्क

InL;rk : +91(11) 23005798

Qku (dk-) : +91(11) 23381428

QDI : +91(11) 23387887

पता : डॉ. मुकर्जी स्मृति न्यास, पी.पी–66, सुब्रमण्यम भारती मार्ग, नई दिल्ली–110003

ई–मेल

kamalsandesh@yahoo.co.in

प्रकाशक एवं मुद्रक : डॉ. नन्दकिशोर गर्ग द्वारा डॉ. मुकर्जी स्मृति न्यास, के लिए एक्सेलप्रिंट, सी–36, एफ.एफ. कॉम्पलेक्स, झण्डेवालान, नई दिल्ली–55 से मुद्रित करा के, डॉ. मुकर्जी स्मृति न्यास, पी.पी–66, सुब्रमण्यम भारती मार्ग, नई दिल्ली–110003 से प्रकाशित किया गया। सम्पादक – प्रभात झा

विषय–सूची

दिल्ली नगर निगम में भाजपा की शानदार जीत के बाद विजय–चिह्न बनाते भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नितिन गडकरी, साथ में भाजपा के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष व दिल्ली प्रदेश भाजपा प्रभारी श्री एम वेंकैया नायडू एवं दिल्ली प्रदेश भाजपा अध्यक्ष श्री विजेन्द्र गुप्ता

दिल्ली नगर निगम चुनाव परिणाम

फिर लहराया भाजपा का परचम.. 6

दृष्टि पत्र 2025 का लोकार्पण.. 9

लेख

1989 का तकलीफदेह प्रसंग
&ykyÑ".k vkMok.kh.. 11

''सेंसर बैंच''
&v#.k tsVyh.. 13

हताश करने वाला माहौल
&xjpj.k nkl.. 19

राजकीय मेहमान बना कसाब!
&,l- xq:efr.. 21

लाल आतंक के सफाए के लिए राजनीतिक इच्छाशक्ति की जरूरत
&tkfxUæ flag.. 23

साक्षात्कार

नितिन गडकरी, राष्ट्रीय अध्यक्ष भाजपा.. 15

अन्य

हिमाचल प्रदेश में लोकायुक्त विधेयक पारित.................................. 18

भाजपा, मध्य प्रदेश कार्यकारिणी बैठक संपन्न.................................. 25

गुजरात : एशिया का सबसे बड़ा सोलर पार्क.................................. 27

बोफ्रा कथा

सेवा का सुख

युफ्राष्ठिर ने राजसूर्य यज्ञ किया। उन्होंने अनेक लोगों को इसमें शामिल होने का न्योता भेजा। इसमें भाग लेने के लिए लोग दूर–दूर से आने लगे। इतने लोगों की देखभाल के लिए पाण्डवों समेत अनेक व्यत्ति उनकी सेवा में जुटे हुए थे। श्रीींष्ण भी यज्ञ में आए। उन्होंने देखा कि अनेक लोगों की भारी भीड़ यज्ञ में शामिल होने को व्याकुल है। वह युफ्राष्ठिर के पास गए। युफ्राष्ठिर ने श्रीींष्ण का अभिवादन किया और उन्हें एक सर्वश्रेष्ठ आसन पर बैठने को कहा।

युफ्राष्ठिर का आमंत्रण पाकर श्रीींष्ण बोले, 'इतने बड़े यज्ञ में सेवा का अवसर मिला है। भला मैं इसे व्यर्थ कैसे जाने दे सकता हूं? सभी लोग अपनी–अपनी क्षमता के अनुसार काम कर रहे हैं। इसलिए मुझे भी काम करना चाहिए।' इस पर युफ्राष्ठिर बोले, 'भगवन। काम करने के लिए अनेक लोग हैं फिर आप क्यों कष्ट उठाएं। वैसे भी आपके लायक यहां पर कोई भी काम नहीं है।'

यह सुनकर श्रीींष्ण मुस्कराते हुए बोले, 'सेवा करने के लिए यह नहीं देखा जाता कि उसका स्तर क्या है? वह तो दय से की जाती है और तभी सेवा का उद्देश्य भी सार्थक हो पाता है। इसलिए आप न भी बताएं तो कोई बात नहीं। मैं अपने अनुरूप काम स्वयं ढूंढ लूंगा।' यह कहकर श्रीींष्ण इफ्रार–उफ्रार देखने लगे। उन्होंने देखा कि अनेक लोग भोजन कर रहे हैं। वह बोले, 'मुझे काम मिल गया। मैं जूठी पत्तालें उठा)ंगा।' यह कहकर वह पत्तालें उठाने के लिए चल दिए और युफ्राष्ठिर उनके सेवा–भाव को देखकर दंग रह गए। सबने श्रीींष्ण के सेवा भाव की सराहना की।

संकलनः रेनू सैनी

नवभारत टाइम्स से साभार

व्यंग्य चित्र

हमें लिखें...

सम्पादक के नाम पत्र

कमल संदेश

सादर आमंत्रित

आपकी राय एवं विचार

सम्पादक,
कमल संदेश
डॉ. मुकर्जी स्मृति न्यास, पीपी–66
सुब्रह्मण्य भारती मार्ग, नई दिल्ली–110003
ई-मेलः
kamalsandesh@yahoo.co.in

प्रिय पाठकगण

कमल संदेश (पाक्षिक) का अंक आपको निरन्तर मिल रहा होगा। यदि किन्हीं कारणवश आपको कोई अंक प्राप्त न हो रहा हो तो आप अपने प्रदेश कार्यालय को या हमें अवश्य सूचित करें।

-सम्पादक

सम्पादकीय

भाजपा के पक्ष में बढ़ता जन-समर्थन

fnल्ली नगर निगम में भी भाजपा की शानदार जीत हुई। यह सिलसिला आगे भी चलना चाहिए। सब मिलकर जब लड़ते हैं तो सामने वाला पस्त हो जाता है। सब मिलकर लड़ते रहने का यह प्रयास जारी रहेगा तो विधानसभा भी फतह होगी और भाजपा दिल्ली की सभी लोकसभा सीटें जीतेगी। दिल्ली नगर निगम चुनाव परिणाम ने जो संकेत दिए हैं उसका असर देश की राजनीति पर पड़े बिना नहीं रह सकता। कांग्रेस चाहे जितनी चालाकी भरे बयान दे पर जनता यह देख रही है कि बिहार, पंजाब, गोवा, मुंबई, उत्तर प्रदेश सहित दिननि चुनाव में जो कांग्रेस की पराजय हुई है वह कांग्रेस की दरकती दीवार की कहानी स्वयं बयां कर रही है।

देश तैयार बैठा है कांग्रेसनीत यूपीए सरकार को हटाने के लिए पर कांग्रेसनीत यूपीए सरकार ने कुर्सी को बड़ा और देश को छोटा समझ लिया है। वह तो हर हाल में किसी भी तरह अपने दिन काटने में लगी है। सन् 2004 के पहले भारत की धाक और साख का पैमाना बुलंदियों पर था पर पिछले 5 वर्षों में यह पैमाना न केवल नीचे खिसका है बल्कि देशभर में अराजकता का वातावरण बना हुआ है।

अराजकता ऐसी है कि देश की सीमाएं असुरक्षा के भाव से चीत्कार कर रही हैं। देश की थाती (सेना) में विवाद से जनमानस आहत है। सरकार नाम की चीज नहीं है। सरकार को पता नहीं कि वह सरकार में है! आजादी के बाद ऐसी अफरातफरी का माहौल भारत ने कभी नहीं देखा। कार्यपालिका, न्यायपालिका, विधानपालिका और चौथा स्तंभ सब अवाक् हैं। देश परिवर्तन चाहता है पर भयग्रस्त कांग्रेसनीत यूपीए परिवर्तन के भय से कुर्सी पर कुंडली मारकर बैठी है और जनतंत्र का जनाजा निकाल रही है। वर्तमान में भारतीय राजनीति के प्रति जनमानस में अनास्था का भाव पैदा हो रहा है। यूपीए के केन्द्रीय मंत्रियों की दुर्गति और भ्रष्टाचार के एक नहीं, अनेक कारनामे हमारी अस्मिता को मटियामेट करने में लगे है। तिरंगा की आन–बान–शान बढ़नी चाहिए थी लेकिन उसकी हर क्षेत्र में शान को गिराने की साजिश रची जा रही है।

चुनाव चाहे जब हो, जनमत तो यह बन गया है कि कांग्रेसनीत यूपीए सरकार अपनी अंतिम सांसें गिन रही है। वैसे भी अगर देखें तो मसला ममता बनर्जी का हो या जयललिता का हो या अखिलेश यादव का हो या शरद पवार का, यूपीए गठबंधन के सभी दल घात लगाए बैठे हैं। भारत सरकार के कृषि मंत्री शरद पवार का यह कहना कि यूपीए सरकार किसान विरोधी है, वित्तमंत्री प्रणब मुखर्जी का यह कहना कि छः महिना में महंगाई काबू नहीं हो सकती, रक्षामंत्री ए.के. एंटोनी का यह कहना सेना में विवाद अच्छा नहीं, यह सभी बयान साफ संकेत देते हैं कि यूपीए का कुनबा बिखर चुका है। पर कुर्सी के मोह ने न केवल मनमोहन जी बल्कि सभी घटक दलों को घेरा हुआ है। कमजोरियों से लबालब घटक दल सिर्फ इस बात को लेकर समर्थन वापस नहीं ले रहे हैं कि आज अगर चुनाव हो तो राजनीतिक परिस्थितियां स्वयं यह कह रही हैं कि भाजपा की स्थिति अन्य दलों से बहुत बेहतर है।

भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ताओं को दिल्ली नगर निगम की जीत को जारी रखने के लिए कठोर परिश्रम करते रहना होगा। भाजपा का भविष्य जनश्रुतियों के अनुसार उज्ज्वल कहा जा सकता है। आज भी भारतीय जनता पार्टी और उसकी सरकारें राज्यों में जिस तरह से जनहितकारी कार्यों के एक नहीं, अनेक सोपान तय कर रही हैं, उससे लगता है कि भाजपा के प्रति जनास्था और समर्पण बढ़ा है। भाजपा कार्यकर्ताओं को विनम्रता के साथ जनता के बीच, जनता के लिए, जनता की मांग पर, जनता को जोड़ते हुए, जनतंत्र के उन सभी मानदंडों की लड़ाई लड़नी होगी जिससे भारत का लोकतंत्र मजबूत हो, लोकशाही पुष्ट हो और लोकतंत्र में जो लोग राजवंशीय परंपरा को लादना चाहते हैं, उसका खात्मा हो। ■

दिल्ली नगर निगम चुनाव परिणाम

फिर लहराया भाजपा का परचम

& lokknnkrk }kjk

Hkkरतीय जनता पार्टी के पक्ष में जनसमर्थन बढ़ता जा रहा है, वहीं कांग्रेस को लगातार पराजय का सामना करना पड़ रहा है। बिहार, मुंबई, पंजाब, गोवा और उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव में पराजय के बाद दिल्ली नगर निगम चुनावों में कांग्रेस की भारी हार हुई है।

भाजपा शासित दिल्ली नगर निगम ने बेहतर पार्किंग सुविधा उपलब्ध कराने को लेकर प्रशंसनीय प्रयास किए, कूड़े के निस्तारण के लिए सक्रियता से काम किया, असंगठित क्षेत्र के मजदूरों की बेहतरी के लिए योजनाएं बनाईं, ऐसे अनेक लोकप्रिय काम किए, जिसके चलते दिल्ली की जनता ने भाजपा के पक्ष में मतदान किया।

वहीं दूसरी ओर, कांग्रेसनीत यूपीए सरकार के शासन में बढ़ते भ्रष्टाचार और महंगाई से परेशान जनता आक्रोशित है और वह अपने लोकतांत्रिक हथियार से कांग्रेस को सबक सिखा रही है। भाजपा उक्त दोनों मुद्दों पर सड़क से लेकर संसद तक जनहित में संघर्ष कर रही है, यही कारण है कि जनता भाजपा को विकल्प के रूप में देख रही है और कांग्रेस पर अपने वोट से चोट कर रही है।

विधानसभा चुनाव से लगभग डेढ़ साल पहले आए यह जनादेश मुख्यमंत्री शीला दीक्षित के लिए भी बड़ा राजनीतिक झटका है।

ज्ञातव्य है कि गत 17 अप्रैल 2012 को आए दिल्ली नगर निगम चुनाव के परिणामों में भाजपा ने शानदार जीत दर्ज की। पार्टी को दो निगमों में स्पष्ट बहुमत मिला तो दक्षिण

भाजपा नेता बोले...

कांग्रेस की हार के पीछे भ्रष्टाचार और महंगाई मुख्य कारण है। यह भाजपा की जीत है दिननि चुनाव में भाजपा का सुशासन, कांग्रेस का भ्रष्टाचार और महंगाई उसकी हार के पीछे तीन मुख्य कारण हैं।

& oad;k uk;M]
ind'k iHkkjh] fnYyh ind'k Hkktik

कांग्रेस ने बिजली, पेट्रोल, एलपीजी गैस और दूध के दामों में वृद्धि को जिस तरह से दिल्ली नगर निगम तक रोका हुआ था, जनता ने कांग्रेस की चाल को समझ कर उसके खिलाफ मतदान किया।

& fot; xk;y]
राष्ट्रीय महामंत्री, भाजपा

दिल्ली में यदि आज भी विधानसभा चुनाव करा लिए जाएं तो कांग्रेस का सूपड़ा ही साफ हो जाएगा। जनता अब भ्रष्टाचार, महंगाई, कुशासन और जनविरोधी नीतियों को कदापि सहने के लिए तैयार नहीं है।

& ik- fot; dekj eYgk=k]
नेता प्रतिपक्ष, दिल्ली विधानसभा

चुनाव परिणाम कांग्रेस के कुशासन के खिलाफ जनादेश है। मुख्यमंत्री शीला दीक्षित को जनता के आदेश की नैतिक जिम्मेदारी स्वीकारते हुए तत्काल पद से हट जाना चाहिए। उन्होंने शासन करने का अधिकार खो दिया है।

& fotUn xIrk]
अध्यक्ष भाजपा दिल्ली प्रदेश

दिल्ली में वह सबसे बड़ी पार्टी के रूप में उभरी।

भाजपा ने लगातार दूसरी बार निगम में शानदार जीत हासिल की। दिल्ली में पहली बार तीन नगर निगमों के 272 सीटों के लिए हुए चुनाव में भाजपा को 138, कांग्रेस को 78, बसपा को 15, राकांपा को 5, जदयू 1, लोजपा 1, समाजवादी पार्टी को 5 तथा लोकदल को 5 सीटें मिलीं। विदित हो कि पिछली बार भाजपा को 164, कांग्रेस को 67 और बसपा को 17 सीटें मिली थीं।

fnYyh uxj fuxe dh fuorZeku e;j Jherh jtuh vCch lfgr Hkktik ds vusd ofj"B urkvksa us viuh fot; irkdk ygjk;kA vfoHkkftr fnufu ds miegkikSj Jh vfuy 'kekZ] fnufu esa lnu ds urk Jh lqHkk"k vk;Z] LFkk;h lfefr ds v/;{k Jh ;ksxsUnz pkanksfy;k] izns'k Hkktik egkea=h Jh vk'kh"k lwn dh thr mYys[kuh; gSA fnufu esa urk izfri{k o dksxzsl urk Jh t; fd'ku 'kekZ utQx<+ ls pquko gkj x,A ■

जीत का जश्न

दिल्ली नगर निगम चुनावों में भाजपा को मिली सफलता के बाद नई दिल्ली स्थित पार्टी मुख्यालय में जश्न का माहौल था। राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नितिन गडकरी, पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष व दिल्ली प्रदेश प्रभारी श्री वेंकैया नायडू, राष्ट्रीय महामंत्री सर्वश्री विजय गोयल व जगत प्रकाश नड्डा, मुख्यालय प्रभारी श्री ओमप्रकाश कोहली एवं दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष श्री विजेंद्र गुप्ता सहित अनेक वरिष्ठ पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं ने जीत का जश्न मनाया। भाजपा कार्यकर्ताओं ने 'भाजपा जिंदाबाद' के नारे ढोल–नगाड़ों के बीच जमकर लगाए। पटाखे छोड़े एवं लड्डू बांटकर खुशियां जाहिर की। ऐसा ही माहौल पूरी दिल्ली में था। देशभर में भाजपा कार्यकर्ताओं ने जीत का जश्न मनाया। ■

निगम चुनाव में दलगत नतीजे

ny	dqy	mÙkjh	nf{k.kh	iwohZ
भाजपा	138	59	44	35
कांग्रेस	78	29	30	19
बसपा	15	7	5	3
निर्दलीय	24	4	14	6
इनेलो	3	—	3	—
जदयू	1	—	—	—
लोजपा	1	1	—	—
राकांपा	6	—	6	—
रालोद	5	4	1	—
सपा	2	—	1	1
कुल	272	104	104	64

- 15 अप्रैल 2012 को हुए चुनाव में दिल्ली के मतदाताओं ने रिकॉर्ड 58 प्रतिशत मतदान किया था।
- नए कानून के अनुसार, पहली बार तीनों निगमों में महिला पार्षदों को मेयर की जिम्मेदारी सौंपी जाएगी।
- इस बार सभी निगमों में आधी सीटें महिलाओं के लिए आरक्षित की गयी थीं। 138 सीटें महिलाओं के लिए आरक्षित थीं और दो सामान्य सीटों पर भी महिलाएं जीतीं। कुल 140 महिलाएं निगम में प्रतिनिधित्व करेंगी।
- चुनाव आयोग के वोट बढ़ाने के अभियान से जो 13 फीसद ज्यादा मतदान हुआ वह भी कांग्रेस के खिलाफ ही गया। ■

दिल्ली विधानसभा और लोकसभा भी जीतेंगे : नितिन गडकरी

fn ल्ली नगर निगम चुनावों में भाजपा की शानदार जीत पर प्रसन्न पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नितिन गडकरी ने कहा कि ये परिणाम कांग्रेसी विरोधी जन भावना का पक्का सबूत हैं और उनका दल आगामी दिल्ली विधानसभा तथा लोकसभा चुनावों में भी विजयी होगा।

श्री गडकरी ने पार्टी की दिल्ली इकाई के वरिष्ठ नेताओं के साथ भाजपा मुख्यालय में विशेष संवाददाता सम्मेलन में दावा किया, ''पंजाब, गोवा, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश और अब दिल्ली स्थानीय निकाय युनावों में कांग्रेस विरोधी महौल साफ नजर आ रहा है। इससे भाजपा लाभ की स्थिति में आई है जिसका फायदा उसे आगामी लोकसभा चुनाव में मिलेगा। हमारी पार्टी सशक्त विकल्प के रूप में उभर रही है।'' उन्होंने कहा कि दिल्ली में होने वाले किसी भी चुनाव का राष्ट्रीय महत्व होता है, क्योंकि यह देश की जनता के मूड को दर्शाता है। भाजपा अध्यक्ष ने कहा कि दिल्ली स्थानीय निकाय चुनाव में मिली जीत से उनकी पार्टी के नेताओं औरकार्यकर्ताओं का मनोबल बहुत बढ़ गया है और वे आगे होने वाले दिल्ली सहित विभिन्न राज्यों के विधानसभा तथा 2014 के लोकसभा चुनाव में अपनी पूरी ताकत झोंक देंगे। कांग्रेस और उसके नेतृत्व को आड़े हाथ लेते हुए उन्होंने कहा कि उसके शासन में व्याप्त कुशासन, लगातार बढ़ती जा रही महंगाई और व्यापक भ्रष्टाचार से जनता आजिज आ चुकी है और इसके लिए वह उसे देश भर में एक के बाद एक जगह कड़ा सबक सिखा रही है।

भाजपा नेताओं ने दिल्ली नगर निगम में हुई भाजपा की जीत को महत्वपूर्ण बताया। लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष श्रीमती सुषमा स्वराज, नेता प्रतिपक्ष राज्यसभा श्री अरुण जेतली, भाजपा दिल्ली प्रदेश के प्रभारी श्री एम. वेंकैया नायडू, राष्ट्रीय महामंत्री श्री विजय गोयल, प्रदेश अध्यक्ष श्री विजेन्द्र गुप्ता और विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष प्रो. विजय कुमार मल्होत्रा ने कहा कि कांग्रेस की उल्टी गिनती शुरू हो चुकी है। दिल्ली भारत की राजधानी है तथा सभी राज्यों के लोग यहां रहते हैं इसलिए दिल्ली लघु भारत है। दिल्ली की जनता के फैसले का सीधा अर्थ है जनादेश। ■

जीत के लिए दिल्ली की जनता और भाजपा कार्यकर्ताओं का आभार

निगम चुनाव परिणाम कांग्रेसी कुशासन के खिलाफ जनादेश : भाजपा

Hkk जपा दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष श्री विजेन्द्र गुप्ता और निगम चुनाव प्रबंधन समिति के चेयरमैन प्रो. विजय कुमार मल्होत्रा ने निगम चुनावों में भारी जीत का श्रेय सभी दिल्लीवासियों और भाजपा कार्यकर्ताओं को देते हुए कहा है कि चुनाव परिणाम कांग्रेस के कुशासन के खिलाफ जनादेश हैं। मुख्यमंत्री शीला दीक्षित को जनता के आदेश की नैतिक जिम्मेदारी स्वीकारते हुए तत्काल अपने पद से इस्तीफा देकर हट जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि तकनीकी दृष्टि से भले ही अब शीला दीक्षित दिल्ली की मुख्यमंत्री हैं लेकिन राज करने का अपना अधिकार उन्होंने खो दिया है।

श्री विजेन्द्र गुप्ता ने कहा कि भाजपा शुरू से ही यह कहती आई है कि दिल्ली नगर निगम के चुनाव कांग्रेस के कुशासन, भ्रष्टाचार, मंहगाई और जनविरोधी नीतियों के खिलाफ जनमत संग्रह साबित होंगे। तीनों नगर निगमों में जिस प्रकार दिल्ली के मतदाताओं ने कांग्रेस के खिलाफ अपना आक्रोश प्रकट करके भाजपा उम्मीदवारों को भारी मतों से विजयी बनाया है, उसने भाजपा की बात एकदम सही साबित कर दी है। ■

दृष्टि पत्र 2025 का लोकार्पण
दिल्ली को अत्याधुनिक, रोजगारयुक्त, हंसता-मुस्कराता महानगर बनाएगी भाजपा : अरुण जेटली

Hkk जपा के राष्ट्रीय नेता श्री अरूण जेटली ने 11 अप्रैल को दिल्ली प्रदेश भाजपा द्वारा दिल्ली के अगले 14 वर्षों के सर्वांगीण विकास के लिए तैयार किया गया दृष्टि पत्र 2025 को लोकार्पित करने के बाद पत्रकारों द्वारा गुजरात दंगों के बारे में पूछे गये सवालों के जवाब में कहा कि भाजपा विरोधी दलों, खासकर कांग्रेस और भाजपा विरोधी प्रचार माध्यमों का देश और समाज विरोधी चेहरा बेनकाब हो गया है। जांच एजेंसियों और अदालतों ने गुजरात दंगों का सच विश्व के सामने उजागर कर दिया है।

भाजपा के गुजरात के मुख्यमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी पिछले 10 साल के लगातार कुप्रचार और षड़यंत्र के बावजूद भी बेदाग होकर निकले हैं। उन्होंने कहा कि देश में कांग्रेस सरकार द्वारा भीषण भ्रष्टाचार किये जाने और कमरतोड़ महंगाई के कारण कांग्रेस विरोधी लहर व्याप्त है। कांग्रेस ने मुम्बई नगर निगम में करारी हार का सामना किया है। 15 अप्रैल को होने वाले दिल्ली नगर निगम चुनाव में भी कांग्रेस की करारी हार होगी। भाजपा स्वच्छ कमल की तरह निखरकर निगम चुनाव पुनः जीतेगी और दिल्ली को एक विश्वस्तरीय सर्वसुविधा सम्पन्न महानगर बनायेगी।

उन्होंने कहा कि दृष्टि पत्र 2025 दिल्ली के संबंध में भाजपा के दृष्टिकोण का दस्तावेज है। जिसमें दिल्ली के शहरी पुनर्निमाण का व्यापक उल्लेख किया गया है। विश्वभर में लोग आर्थिक और राजनैतिक कारणों से गांवों से निकलकर शहरों की तरफ आ रहे हैं। दिल्ली एक लघु भारत का रूप बन चुका है। यहां के दो करोड़ लोगों का जीवन स्तर सुधारना भाजपा की प्राथमिकता है। कचरा प्रबंधन, कचरा निस्तारण, पर्याप्त बिजली, पानी, यमुना का पुनरोद्धार, पर्यावरण प्रबंधन, प्रदूषण की समाप्ति, शिक्षा, स्वास्थ्य, आर्थिक गतिविधियां, सुचारू और पर्याप्त सुरक्षित परिवहन व्यवस्था दिल्ली की जरूरतें हैं। इन विषयों पर दिल्ली में 13 साल से शासनरत और केन्द्र में 7.5 वर्ष से शासनरत कांग्रेस सरकारों ने कुछ नहीं किया। राष्ट्रमंडल खेलों के घोटालों ने विश्व में भारत का मस्तक नीचा किया है।

दृष्टि पत्र का लोकार्पण आज भाजपा दिल्ली प्रदेश मुख्यालय में आयोजित एक पत्रकार सम्मेलन में राज्यसभा में नेता प्रतिपक्ष श्री अरूण जेटली, दिल्ली प्रदेश के प्रभारी श्री एम. वेंकैया नायडू, भाजपा दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष श्री विजेन्द्र गुप्ता तथा नगर निगम चुनाव प्रबंधन समिति के अध्यक्ष

प्रो. विजय कुमार मलहोत्रा आदि ने किया। इस अवसर पर सर्वश्री विजय गोयल, आरती मेहरा, वाणी त्रिपाठी, डॉ. हर्ष वर्धन, मांगे राम गर्ग, प्रो. जगदीश मुखी, विजय जौली, विवेक शर्मा सहित अनेक वरिष्ठ नेता उपस्थित थे।

इस अवसर पर प्रदेश प्रभारी श्री एम. वेंकैया नायडू ने कहा कि भाजपा ऐसी दिल्ली की कल्पना करती है जिसमें कोई भी व्यक्ति भूखा न रहे। प्रत्येक नागरिक को शुद्ध पीने का पानी उपलब्ध हो। दिल्ली स्लम मुक्त रहे। यहां झुग्गी झोंपड़ी का नामो–निशान न हो। हर परिवार को आवास की सुविधा उपलब्ध रहे ताकि कोई भी गरीब खुले आसमान के नीचे सोने को विवश न हो। भाजपा ऐसी दिल्ली की कल्पना करती है जहां हर व्यक्ति को उसके कौशल, दक्षता, कार्यक्षमता और योग्यता के अनुसार रोजगार का सुअवसर प्राप्त हो।

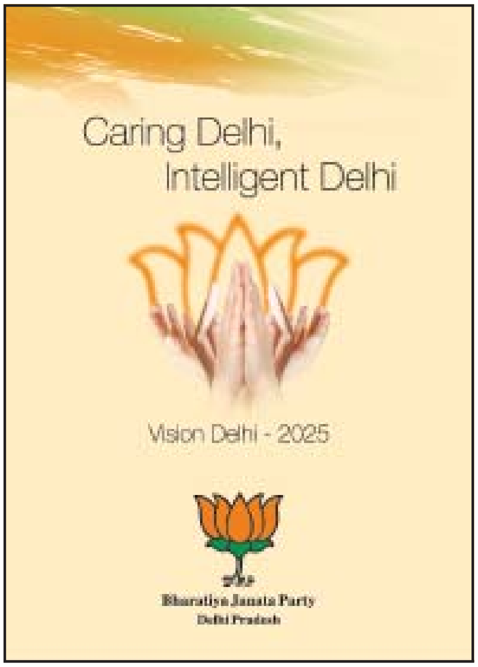

उन्होंने कहा कि किसी भी महानगर के बच्चे उस नगर के लिए सबसे मूल्यावान स्रोत होते हैं। भाजपा वायदा करती है कि मासिक आधार पर देखभाल करके उनका विकास सुनिश्चित करेंगे तथा उन्हें उत्कृष्ट स्वास्थ्य सुविधा और शिक्षा उपलब्ध करायेंगे जिससे कि वे हमारे नगर व राष्ट्र की प्रगति का इंजन बन कर राष्ट्र निर्माण में भागीदार तथा सहायक बन सकें।

भाजपा दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष श्री विजेन्द्र गुप्ता ने इस अवसर पर कहा कि दिल्ली प्रदेश भाजपा का दिल्ली को समर्पित दृष्टि पत्र 2025 हमारी आत्मा की आवाज है। यह दृष्टि पत्र दिल्ली के समग्र विकास तथा मानवीय लोक कल्याणकारी कार्यक्रमों से जुड़ा महत्वपूर्ण दस्तावेज है। भाजपा चाहती है कि एक ऐसी दिल्ली का निर्माण हो जो हरी–भरी, मुस्कराती–लहलहाती राजधानी के रूप में जानी जाये। भाजपा दिल्ली को दुर्घटना मुक्त, टैंकर मुक्त, प्रदूषण–मिलावट मुक्त शहर बनाना चाहती है जहां कि अर्थव्यवस्था इतनी सुदृढ़ हो कि सारा भारत उस पर नाज़ कर सके। भाजपा दिल्ली को रोजगार–व्यापार का हब बनायेगी जहां संचार, सूचना, आवास, उद्योगों की भरमोर होगी। भाजपा चाहती है कि दिल्ली के हर निवासी को रोटी, हर हाथ को काम और हर सिर को छत उपलब्ध हो। हम जुनून के साथ दिल्ली को संवारेंगे, सजायेंगे जहां के हर नागरिक के चेहरे पर सम्पन्नता, समृद्ध और संतोष की मुस्कान होगी।

श्री गुप्ता ने कहा कि भाजपा का लक्ष्य है कि वह ऐसी दिल्ली का निर्माण करे जिसमें बुजुर्गों, महिलाओं और समाज के कमज़ोर वर्गों के लिए सुरक्षा और सहायता उपलब्ध हो। सभी वर्गों के लिए स्वास्थ्य सुविधा भी उपलब्ध हो। दिल्ली की जनता को सुरक्षित और आरामदेह परिवहन सुविधा उपलब्ध कराने के लिए भाजपा कृतसंकल्पित है। पार्टी दिल्ली को एक सुरक्षित, आरामदेह और सर्वसुलभ, वृहद परिवहन सुविधा उपलब्ध कराना चाहती है ताकि कोई भी नागरिक अपने गंतव्य तक कम समय में आसानी से पहुंच सके। उन्होंने कहा कि दिल्ली के साथ निरंतर और दीर्घकाल तक जुड़े रहने के लिए भाजपा गर्वान्वित महसूस करती है। पार्टी दिल्ली के चहुंमुखी विकास के लिए, जिसने अन्त्योदय के दर्शन के साथ भौतिक और सामाजिक अवसंरचनात्मक विकास भी सम्मिलित है, के लिए प्रतिबद्ध है। भाजपा का सपना है कि आधुनिक तकनीक का उपयोग जीवन के हर क्षेत्र में दिल्लीवासी कर सकें। आधुनिक तकनीक की सहायता से समाज के सभी वर्गों का विकास और सबको न्याय सुनिश्चित किया जायेगा।

श्री गुप्ता ने कहा कि भाजपा का दृढ़ विश्वास है कि उपरोक्त कार्यों और दूरदृष्टि से दिल्ली विश्व का एक ऐसा महानगर बनेगा जिसमें यहां के नागरिकों को सर्वोत्तम गुणवत्ता वाला जीवनस्तर उपलब्ध होगा। ऐसे जीवनस्तर की तुलना विश्व के किसी भी अन्य महानगर या राजधानी से की जा सकेगी। दिल्ली एक ऐसी राजधानी बनेगी जहां भारतीय समाज के सभी वर्गों के आर्थिक और सामाजिक उन्नयन के साथ ही विश्व के अन्य देशों के लोगों को भी रहने और सीखने का अवसर प्राप्त होगा। भाजपा दिल्ली को उच्चस्तरीय प्रतिभाओं का एक ऐसा चुम्बकीय शहर बनायेगी जिस पर सारी दुनिया के लोग नाज करेंगे। भारतीय जनता पार्टी 'बेहतर शासन और सुशासन के दर्शन के साथ कार्य करने के लिए कृतसंकल्पित है। भाजपा जनता के साथ किये गये अपने वायदों को पारदर्शिता तथा पूरी जवाबदेही के साथ निभाने के लिए प्रतिबद्ध है। ■

सेना सम्बन्धी एक्सप्रेस की रिपोर्ट से ताजा हुआ 1989 का तकलीफदेह प्रसंग

& yky–".k vkMok.kh

bस सप्ताह का सर्वाधिक चौंकाने वाला समाचार नई दिल्ली से प्रकाशित 'इंडियन एक्सप्रेस' ने गत् बुधवार (4 अप्रैल) को अपने प्रथम पृष्ठ पर प्रकाशित किया है। इस समाचार रिपोर्ट पर छः स्तम्भों में फैला बैनर शीर्षक यह हैः 'दि जनवरी नाइट रायसीना हिल वाज स्पूक्ड'। उपशीर्षक इस प्रकार हैः सेना की दो यूनिटों ने सरकार को बगैर बताए दिल्ली की तरफ कूच किया (टू आर्मी यूनिट्स मूव्ड टूवर्ड्स दिल्ली विदआउट नोटिफाईंग गवर्नमेंट)।,

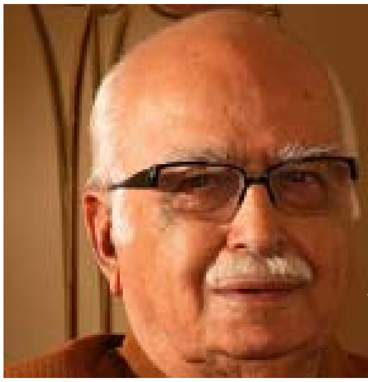

'इंडियन एक्स्रेस' का समाचार दर्शाता है कि इन दिनों सरकारी क्षेत्रों में परस्पर अविश्वास कितना गहरा है। हालांकि, इससे राहत मिलती है कि इंडियन एक्स्रेस ने स्वयं ही इसको स्पष्ट किया है कि इस समाचार का कोई गलत निहितार्थ न निकाला जाए। एक बॉक्स में सेना श्मुख के 'एक श्रेफेशनल सैनिक की बेदाग़ छवि' की श्शंसा करते हुए कहा गया है कि कोई भी 'सी' शब्द का उपयोग 'क्यूरियिस' ञउत्सुकताप के सिवाय नहीं करता।

यदि कोई भी 4 अप्रैल की रिपोर्ट और 5 अप्रैल को उसके सम्बन्ध में प्रकाशित रिपोर्टों को पूरा पढ़े तो अवश्य ही मानेगा कि यह रिपोर्ट अत्यन्त चिंतनीय हैं और जैसाकि भाजपा के प्रवक्ता रविशंकर प्रसाद ने टिप्पणी की कि इससे उद्‌घाटित होता है 'सरकार–सेना के सम्बन्धों में इन दिनों सर्वाधिक खराब रिश्ते हैं। इस सप्ताह 'इंडियन एक्सप्रेस' का समाचार दर्शाता है कि इन दिनों सरकारी क्षेत्रों में परस्पर अविश्वास कितना गहरा है। हालांकि, इससे राहत मिलती है कि इंडियन एक्सप्रेस ने स्वयं ही इसको स्पष्ट किया है कि इस समाचार का कोई गलत निहितार्थ न निकाला जाए। एक बॉक्स में सेना प्रमुख के 'एक प्रोफेशनल सैनिक की बेदाग़ छवि' की प्रशंसा करते हुए कहा गया है कि कोई भी 'सी' शब्द का उपयोग 'क्यूरियिस' (उत्सुकता) के सिवाय नहीं करता।

मेरे मित्र और पड़ोसी विजय कपूर, जो संघ शासित प्रदेश दिल्ली के पूर्व उप–राज्यपाल रहे हैं, मुझे मिले थे और उन्होंने मुझे सुनाया कि कैसे 1989 में राजीव गांधी सरकार की पराजय के बाद तत्कालीन गृह मंत्री बूटा सिंह ने सेना को बुलाने की गंभीर कोशिश की और यह कोशिश कैसे असफल की गई।

उस समय विजय कपूर दिल्ली के मुख्य सचिव थे। तब दिल्ली के उप–राज्यपाल रोमेश भण्डारी थे। जब कपूर ने 1989 के इस प्रकरण की यादें मुझे बताईं तो मैंने इसके दस्तावेजी साक्ष्य तलाशने शुरु किए। संयोग से मुझे रोमेश भण्डारी की आत्मकथा हाथ लगी जो उन्होंने दस वर्ष पूर्व मुझे भेंट की थी। इसमें श्री भण्डारी ने उल्लेख किया है कि सितम्बर, 1988 में वह उप–राज्यपाल नियुक्त हुए और आगे वे कहते हैं "मेरा कार्यकाल संक्षिप्त था क्योंकि 1989 में आम चुनावों में राजीव गांधी की पराजय के बाद मैंने त्यागपत्र दे दिया था।"

भण्डारी लिखते हैंः

"1989 में आम चुनावों के नतीजे घोषित होने के तुरंत बाद यह स्पष्ट हो गया था कि कांग्रेस पार्टी हार गई है। लोकसभा को भंग करने की कानूनी प्रक्रिया अभी शुरु होनी थी। अन्य दलों के नेता इसकी मांग कर रहे थे और राजीव गांधी सम्बन्धित पत्र राष्ट्रपति भवन भेजने की प्रक्रिया में थे। हालांकि चुनाव आयोग द्वारा नतीजों की अधिसूचना जारी की जानी शेष थी। इसके तुरंत पश्चात् ही लोकसभा भंग की जा सकती थी।

मैं तिथि तो भूल गया, लेकिन एक रात मुझे तब के गृह मंत्री बूटा सिंह का फोन आया कि इस तरह की अफवाहें हैं कि हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश से अजीत सिंह और अन्य लोग लाखों किसानों को इकट्ठा कर दिल्ली

की तरफ कूच कर रहे हैं ताकि संसद और राष्ट्रपति भवन का घेराव किया जा सके। इसका उद्देश्य राजीव गांधी को संसद भंग करने हेतु बाध्य करना था जिसके बगैर नई सरकार नहीं बन सकती थी। बूटा सिंह ने कहा कि संसद भंग तो होगी लेकिन कुछ कानूनी पहलू भी हैं जिनका उल्लेख मैंने ऊपर किया है। उन्होंने मुझे कहा कि मैं तुरंत कदम उठाऊं और सुनिश्चित करुं कि तब तक कानून–व्यवस्था की स्थिति न बिगड़े । हम दिल्ली में ऐसे धावे की अनुमति नहीं दे सकते।

मुझे ऐसी कोई रिपोर्ट नहीं मिली थी, मैंने पुलिस कमिश्नर राजा विजय करण से पूछा कि क्या वे इस बारे में कुछ जानते हैं। जानकारियां जुटाने के बाद उन्होंने मुझे बताया कि ऐसी कोई रिपोर्ट नहीं है। चूंकि स्वयं गृहमंत्री ने इस मामले का उल्लेख किया था, इसलिए मामले को यूं ही नहीं छोड़ा जा सकता था। मैंने तुरंत अपने आवास 18, अकबर रोड पर बैठक बुलाई। इसमें मुख्य सचिव विजय कपूर जोकि अब दिल्ली के उपराज्यपाल हैं, पुलिस आयुक्त राजा विजय करण और गुप्तचर विभाग, सुरक्षा इत्यादि से संबंध रखने वाले उच्चाधिकारियों ने भाग लिया। मैंने इंटेलीजेंस ब्यूरो और गृह मंत्रालय के अधिकारियों को भी बुलाया। बूटा सिंह द्वारा प्रकट किए गए डर को हमने विचारा। सभी ने कहा कि गृह मंत्री ने जो सुना है, उसमें कोई सच्चाई नहीं है। इतनी बड़ी संख्या में लोगों को जुटाने का काम कुछ घंटों में नहीं हो सकता। यदि ऐसे कोई इरादे होते तो हमारे स्रोतों को इसके बारे में पता चल जाता। सभी के इन विचारों से मैं भी पूरी तरह सहमत था और मैंने कहा कि मैं प्रधानमंत्री निवास और गृह मंत्री को बताऊंगा कि इन अफवाहों में कोई सच्चाई नहीं है। यह सब कुछ घटित हुआ। मदनलाल खुराना ने इसे ऐसे प्रस्तुत किया कि यह मेरे द्वारा सेना को बुलाए जाने का असफल प्रयास था। उन्हें यह अच्छी तरह से मालूम होना चाहिए था कि कोई राज्यपाल, उप–राज्यपाल या मुख्यमंत्री स्वयं सेना को नहीं बुला सकता, उसे रक्षा मंत्रालय के माध्यम से ही यह करना होता है।"

उप–राज्यपाल भंडारी अपनी अनभिज्ञता प्रकट कर सकते हैं। लेकिन तत्कालीन गृहमंत्री बूटा सिंह नहीं कि उन्होंने एक मनघडंत कहानी, जो उनके उप–राज्यपाल की जुबानी साफ हुई, के आधार पर सेना को बुलाने की पहल की थी।

> ***मैं अक्सर अपने भाषणों में इन दोनों ईसाई पर्वों के महत्व का स्मरण करता हूं। 'गुड फ्राइडे' को माना जाता है कि ईसा मसीह को सूली पर चढ़ाया गया और 'ईस्टर सण्डे' को उनके पुनर्जीवित होने का दिन माना जाता है। जनसंघ के हम लोगों के लिए 'गुड फ्राइडे' के दिन 'दोहरी सदस्यता का पारित प्रस्ताव सूली पर चढ़ाने जैसा था और 'ईस्टर सण्डे' जिस दिन भाजपा का श्री वाजपेयी के द्वारा गठन हुआ एक प्रकार से पुनर्जीवित होना था।***

टेलपीस (पश्चलेख)

ठीक बत्तीस वर्ष पूर्व 6 अप्रैल , 1980 को भाजपा की स्थापना नई दिल्ली के फिरोजशाह कोटला मैदान में सम्पन्न एक अखिल भारतीय सम्मेलन में की गई थी।

यह सम्मेलन, जनता पार्टी के संसदीय बोर्ड द्वारा दो दिन पूर्व पारित एक प्रस्ताव का परिणाम था जिसमें तथाकथित 'दोहरी सदस्यता', यानी जनता पार्टी की सदस्यता और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की सदस्यता से अभिप्राय था, पर प्रतिबन्ध लगाना था।

जनता पार्टी का गठन चार विपक्षी दलों–जनसंघ, कांग्रेस (ओ) लोकदल और समाजवादी पार्टी के विलय से हुआ था। जनसंघ के अधिकांश सदस्य राष्ट्रीय स्वयंसेवकसंघ के स्वयंसेवक या संघ से जुड़े थे। वस्तुतः, दोहरी सदस्यता वाला प्रस्ताव जनता पार्टी के उन कुछ नेताओं की पहल था जो इस निष्कर्ष पर पहुंचे थे कि जनसंघ, पार्टी के लिए बोझ बन गया है और पार्टी के इस अंग को जितनी जल्दी अलग कर दिया जाए उतना ही अच्छा। संसदीय बोर्ड का 'दोहरी सदस्यता' वाला प्रस्ताव इस लक्ष्य को हासिल करना था। 'दोहरी सदस्यता' का प्रखर विरोध श्री मोरारजीभाई देसाई, श्री सिकन्दर बख्त और अन्य अनेक जनता पार्टी नेताओं ने किया जो जनसंघ से संबंधित नहीं थे।

सन् 1980 में 4 अप्रैल को यह प्रस्ताव पारित हुआ। उस वर्ष 4 अप्रैल 'गुड फ्राइडे' था, अतः 6 अप्रैल यानी उस वर्ष स्थापना दिवस 'ईस्टर सण्डे' था।

मैं अक्सर अपने भाषणों में इन दोनों ईसाई पर्वों के महत्व का स्मरण करता हूं। 'गुड फ्राइडे' को माना जाता है कि ईसा मसीह को सूली पर चढ़ाया गया और 'ईस्टर सण्डे' को उनके पुनर्जीवित होने का दिन माना जाता है।

जनसंघ के हम लोगों के लिए 'गुड फ्राइडे' के दिन 'दोहरी सदस्यता का पारित प्रस्ताव सूली पर चढ़ाने जैसा था और 'ईस्टर सण्डे' जिस दिन भाजपा का श्री वाजपेयी के द्वारा गठन हुआ एक प्रकार से पुनर्जीवित होना था। ■

''सेंसर बैंच''

मीडिया पर न्यायिक निषेधाज्ञा उतनी ही अवांछित है जितनी कि कार्यपालिका के आदेश

v#.k tsVyh

Vदालतों ने कुछ ऐसे निर्देश जारी किए हैं जिनमें सार्वजनिक महत्व के कुछ मामलों के प्रकाशनों या टिप्पणी करने पर रोक लगा दी गई है। मीडिया पर जुडिशियल सेंसरशिप लागू करने के आदेश बहुत ही कम दिखाई पड़ते हैं। कुछ दुर्लभ से भी दुर्लभ तय मामलों को छोड़कर न्यायिक ''प्रतिबन्ध आदेश'' मीडिया पर एक्जीक्यूटिव प्रतिबंध की तरह ही अच्छे नहीं माने जा सकते हैं।

आज की बदली स्थितियों में इन न्यायिक आदेशों पर टिप्पणी और इनके प्रवर्तन की असांभव्यता पर नजर डालना आवश्यक है। मीडिया के स्वरूप में काफी परिवर्तन आया है। अब इलेक्ट्रानिक मीडिया ही एजेण्डा सेट करता है, जिसने ''न्यूज'' को पुनर्भाषित कर दिया है। न्यूज वही समझी जाती है जिसे कैमरा अपनी पकड़ में लें सकता है। अगर कैमरे की पकड़ में कोई न्यूज नहीं आती है तो मीडिया के लिए वह सापेक्षतया कम महत्व की बन जाती है। इस प्रकार, निश्चित ही इलेक्ट्रानिक मीडिया अतिरंजिता और 'ब्रेकिंग न्यूज' प्रकार की सनसनीखेज शैली को जन्म देता है। डिजीटल मीडिया में समाचार, सम्मति, गपशप और यहां तक की गैर–जिम्मेदाराना टिप्पणियों का स्थान रहता है। प्रिंट मीडिया के सामने छपते–छपते अर्थात् देर से प्राप्त समाचारों के प्रकाशन जैसी चुनौतियां खड़ी हो गई हैं। वह उन समाचारों को दोहरा नहीं सकता है जो

लोगों ने विगत रात ही सुन लिया हो। इसका स्वाभाविक परिणाम यही है कि वह समाचार, सम्मतियों, टिप्पणियों या ब्रेकिंग न्यूज की एक्सक्लूजिव स्टोरी ही प्रकाशित करे।

डिजीटल और इलेक्ट्रानिक मीडिया दोनों के ही संदर्भ में सेंसरशिप का प्रवर्तन, चाहे वह एक्जीक्यूटिव हो या जूडिशियल, यदि असंभव न भी हो तो भी एक बहुत ही कठिन कार्य है। सेटेलाइट कम्युनिकेशन इतना सशक्त बन चुका है कि सेंसरशिप या प्रतिबंध को लागू करना अत्यंत कठिन हो गया है। इस प्रकार, यदि कोई प्रतिबंध आदेश होता भी है, जिसको लागू किया जाना हो तो अधिक से अधिक उसे देश के भौगोलिक क्षेत्र तक ही सीमित रखा जा सकता है। यदि 70 के दशक के मध्य में इंटरनेट की सुविधाएं उपलब्ध रहतीं तो आपात्कालीन अत्याचार कहीं कम होते।

वाक् और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता एक संवैधानिक गारण्टी है। इन पर केवल विधिसम्मत प्रतिबंध लग सकता है जिसका बहुत कुछ संबंध भारत की संप्रभुता और एकता, देश की सुरक्षा, विदेशों से दोस्ताना सम्बन्धों, सार्वजनिक व्यवस्था, शालीनता एवं नैतिकता या न्यायालय की अवमानना या किसी अपराध की उत्तेजना से जुड़ा रहता है। न्यायालयों के लिए भी यह अनिवार्य है वह न्यायिक निषेधाज्ञा जारी करते समय इन संवैधानिक गारण्टियों के भंग न होने की बात को ध्यान में रखे। किसी सूचना का प्रसारण सार्वजनिक हित में होता है। किन्तु, कोई भी सूचना या सम्मति, चाहे कितनी ही असांभव्य क्यों न दिखाई पड़ती हो, उसके भी प्रकाशित होने का अधिकार है।

अतः, यदि कोई न्यायालय किसी सूचना या देश में फौजों के आवागमन सम्बन्धी किसी विषय पर प्रतिबंध लगाती है तो स्पष्ट ही यह उसके अधिकार क्षेत्र से बाहर है। न्यायालय किसी राजनैतिक क्षेत्र में प्रवेश नहीं कर सकता है। चाहे फौजों के आवागमन के परिणाम की बात हो, या फौजों के आवागमन से सम्बन्धित कोई अन्य विषय हो या इनके कारण राष्ट्रीय सुरक्षा आदि की बात हो, ये सभी केवल राजनैतिक दायरे में आने वाली चीजें हैं। इस प्रकार के विषयों पर बहस, जिसमें सूचना और सम्मतियों का प्रचार–प्रसार, यहां तक कि किसी

समाचारपत्र में प्रकाशित लेख की अत्यंत असांभव्यता के बावजूद भी, पूरी तरह से सरकार के दायरे में आती है, न कि न्यायालय के। ऐसा किसी न्यायिक स्तर का मापदण्ड हमारे पास नहीं है जिससे न्यायालय यह निर्णय कर सके कि इस सम्बन्ध में क्या कुछ प्रकाशित किया जाए या उस पर बहस की जा सके।

किसी भी प्रकार के भ्रष्टाचार के प्रकाशन से किसी व्यक्ति की प्रतिष्ठा का आहत होना स्वाभाविक है। क्या किसी व्यक्ति की प्रतिष्ठा का आहत होना इस प्रकार के प्रकाशन पर प्रतिबंध लगाने का आधार बन सकता है? यदि किसी प्रकाशन या प्रस्तावित प्रकाशन में आरोप सही हैं या लेखक उन्हें सही समझता है तो उनका प्रकाशन किया जा सकता है। हो सकता है कि प्रकाशन बदनामी का आधार हो, परन्तु उसे प्रकाशित किया जाना चाहिए जब तक कि यह सच माने जाते हों। एक विख्यात ब्रिटिश जज लार्ड डेनिंग ने अपने ऐतिहासिक निर्णय में कहा था कि जहां तक किसी लेख प्रकाशन से वादी की बदनामी की बात है, स्पष्ट है कि वह इंजक्शन प्राप्त नहीं कर सकता है। न्यायालय ऐसे किसी लेख के प्रकाशन पर प्रतिबंध नहीं लगाएगा, चाहे उससे बदनामी हो। जब प्रतिवादी यह कहता हो कि वह सार्वजनिक महत्व के मामले पर अपनी टिप्पणी को न्यायसंगत या समुचित टिप्पणी करने की क्षमता रखता है।

किसी अत्यंत दुर्लभ से दुर्लभतम मामले में ही किसी प्रकाशन के न्यायिक निर्देश पर प्रतिबंध लगाने की सम्भावना होती है। इस प्रकार के निर्देश का मंजूरी का अधिकार क्षेत्र बहुत ही संकुचित होता है और इसका प्रयोग किसी भी बदनामी और मानहानि जैसे मामलों में, विशेष रूप से, सावधानी से किया जाना चाहिए। प्रतिबंध तभी लगाया जाना चाहिए जब न्यायालय को लगे कि मानहानि का वह मामला अत्यंत अयुक्तियुक्तसंगत हो, जिससे वादी को गम्भीर चोट पहुंचे और न्यायालय को ऐसा लगे कि वादी विशेषाधिकार की रक्षा करना या न्यायसंगत ठहराना असम्भव होगा। बदनामी किसी व्यक्ति के निजी हित का मामला है। सम्भव है कि किसी प्रकाशन में सार्वजनिक हित हो। इन दोनों के बीच द्वंद्व होने से निश्चित ही पलड़ा सार्वजनिक हित की तरफ झुकता है। किन्तु निजी हित या प्रतिष्ठा का संरक्षण तभी संभव है जब सच्चाई के विशेषाधिकार या न्यायसंगतता का तर्क को सिद्ध करना लगभग असंभव दिखाई पड़ता हो। यदि न्यायालय इस बात से संतुष्ट है कि ऐसे मामलों में किसी प्रकार का बचाव करना मुश्किल होगा तभी वह इस प्रकार के प्रतिबंध की मंजूरी देगा।

किन्तु, जब कोई मामला गवर्नेंस, भ्रष्टाचार, कुप्रशासन या आचरणहीनता के मुद्दों से जुड़ा हो तो न्यायिक प्रतिबंध आदेश स्वीकार नहीं किया जाना चाहिए।

जब किसी प्रकाशन पर न्यायिक आदेशों द्वारा प्रतिबंफ्रा लगाया जाता है तो प्रतिस्पर्फ्री सार्वजनिक हितों के बीच द्वंद्व पर विचार किया जाना चाहिए। प्रकाशन, सूचना के प्रसारण और बहस के सार्वजनिक हित एक दूसरे पर हावी हो जाते हैं। यह लोकतांत्रिक समाज के अनिवार्य तत्व है। न्यायालयों को भी इस प्रकार के सार्वजनिक हितों का तिरस्कार नहीं करना चाहिए।

न्यायिक प्रतिबंध आदेश स्वीकार करते समय, न्यायालय को इस प्रकार के आदेशों को लागू किए जाने की असंभावनाओं पर भी विचार करना चाहिए। न्यायालयों को ऐसे किसी आदेश को स्वीकार नहीं करना चाहिए, जिसे लागू न किया जा सके। अतः, यदि किसी विशेष समाचार अन्तर्राष्ट्रीय चैनलों पर प्रसारण करने का निर्णय लिया जाता है तो इलेक्ट्रानिक मीडिया पर उसे प्रकाशित करने पर प्रतिबंध लगाना बेकार हो जाएगा। डिजीटल साइट्स पर इस प्रकार की सूचना को विश्वभर में कहीं से भी लोड किया जा सकता है। लोडर की पहचान अज्ञात बनी रहेगी। विश्वभर के ई–मेल, ब्लॉग और वेबसाइट उस प्रतिबंधित लेख को अपलोड कर सकते हैं। सोशल मीडिया विस्तार से टिप्पणियां दे सकते हैं। केवल राष्ट्रीय मीडिया पर प्रतिबंध बना रहेगा। सेटेलाइट मीडिया की कोई भौगोलिक सीमा नहीं होती है। इससे न्यायिक आदेश मजाक बनकर रह जाएगा। न्यायालय ऐसे आदेश नहीं दे सकता है जिनका लागू करना असंभव या कठिन हो। जजों को अपना आदेश देते समय इस बात का ख्याल रखना होगा कि उनके न्यायिक आदेश लागू न होने के कारण कहीं बेकार न हो जाएं।

जब किसी प्रकाशन पर न्यायिक आदेशों द्वारा प्रतिबंध लगाया जाता है तो प्रतिस्पर्धी सार्वजनिक हितों के बीच द्वंद्व पर विचार किया जाना चाहिए। प्रकाशन, सूचना के प्रसारण और बहस के सार्वजनिक हित एक दूसरे पर हावी हो जाते हैं। यह लोकतांत्रिक समाज के अनिवार्य तत्व है। न्यायालयों को भी इस प्रकार के सार्वजनिक हितों का तिरस्कार नहीं करना चाहिए। ■

ञलेखक राज्यसभा में प्रतिपक्ष के नेता हैंफ

कांग्रेस–नीत यूपीए सरकार की उल्टी गिनती शुरू : नितिन गडकरी

भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नितिन गडकरी के कुशल नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी की विजयश्री निरंतर नई)ँचाइयां छू रही है। गोवा में कांग्रेस से सद्दाा छीनकर एवं पंजाब में भाजपा–अकाली दल सरकार को पुनः सद्दाासीन कर इतिहास रचा है। भाजपा ने दिल्ली नगर निगम ज्एसएडीप को तीन हिस्सों–उद्दारी दिल्ली, दक्षिणी दिल्ली और पूर्वी दिल्ली– में बांटे जाने के बाद शानदार सफलता श्प्त कर अपने विरोधि यों को हतप्रभ कर दिया है।

श्री नितिन गडकरी का मानना है कि यह भाजपा की विजय और कांग्रेस की पराजय दोनों ही हैं क्योंकि भाजपा पिछले पांच वर्षों से दिननि में सद्दाा थी और लोगों ने उसके प्रशासन की प्रशंसा करते हुए उसमें विश्वास जताया है और दूसरी तरफ कांग्रेस की पराजय इसलिए हुई क्योंकि इसकी सरकारें दिल्ली और केन्द्र दोनों में सद्दााफ्रीन हैं।'' दिननि के चुनाव परिणाम बताते हैं कि स्थानीय सांसदों और मंत्रियों को पूरी तरह नकार दिया क्योंकि इनके क्षेत्रों में कांग्रेस की बेहद दुर्गति हुई है। लोगों ने यूपीए सरकार को बेलगाम भ्रष्टाचार, आसमान छूती महंगाई, निरंतर बढ़ते जा रहे घपले घोटालों और दिल्ली की निरंतर बिगड़ती जा रही कानून–व्यवस्था को जिम्मेदार मानते हुए उसके खिलाफ निर्णय दिया है क्योंकि इन कारणों से दिल्ली भारत की अपराध और बलात्कार के नाम से राष्ट्रीय राजधानी मशहूर हो गई है।

भाजपा साहित्य एवं प्रकाशन प्रकोष्ठ के संयोजक श्री अम्बा चरण वशिष्ठ ने दिल्ली नगर निगम के चुनाव परिणामों पर भाजपा राष्ट्रीय अफ्रयक्ष श्री नितिन गडकरी से उनके निवास पर बातचीत की, जिसके प्रमुख अंश नीचे उद्धृत हैं:

नगर निगम के चुनावों से क्या संदेश मिलता है?

संदेश एकदम स्पष्ट और मुखर है। इस वर्ष होने वाले विधानसभा चुनाव और अंततः 2014 में लोकसभा के होने वाले चुनावों के लिए कांग्रेस की उलटी गिनती की शुरूआत हो चुकी है।

क्या इसे भाजपा की विजय या कांग्रेस की पराजय माना जाए?

यह भाजपा की विजय और कांग्रेस की पराजय दोनों ही हैं। भाजपा की विजय इसलिए है क्योंकि भाजपा पिछले पांच वर्षों से दिननि में सत्ता में थी और लोगों ने उसके प्रशासन की प्रशंसा कर उसमें विश्वास जताया है दूसरी तरफ कांग्रेस की पराजय इसलिए है क्योंकि वह आसमान छूती महंगाई और मुद्रास्फीति, बढ़ते भ्रष्टाचार और दिन–ब–दिन हो रहे घोटाले–घपलों के कारण बदनाम हो चुकी है जिससे दिल्ली को भारत की अपराध और बलात्कार के नाम से राष्ट्रीय राजधानी मशहूर हो गई है और ऐसी राष्ट्रीय राजधानी में आम आदमी का जीना दूभर हो गया है।

दिल्ली में विजय के प्रमुख बिन्दु क्या रहे?

भाजपा ने सरकार–विरोधी कारक का सफलतापूर्वक सामना किया है। वह मतदाताओं को यह भरोसा दिलाने में सफल रही है कि भाजपा जो कहती है, वही करती भी है और वह अपने वायदों को भलीभांति निभाने में सक्षम है। क्योंकि नागरिक सुविधाएं, जुटाने का काम स्थानीय सम्बधित निकाय पर रहता है जिससे नागरिकों का दिन–प्रतिदिन का जीवन प्रभावित होता है, इसलिए भाजपा के शासन में दिल्ली नगर निगम ने लोगों को साफ और कुशल सेवाएं प्रदान कर एक सराहनीय कार्य किया। जिस ढंग से केन्द्र तथा शीला दीक्षित की सरकारों ने काम किया है, यह परिणाम एकदम उनके खिलाफ है।

क्या इन चुनावों के परिणाम इस वर्ष गुजरात और हिमाचल प्रदेश राज्यों के विधान सभाओं पर भी असर डालेंगे?
निश्चित ही! प्रत्येक चुनाव परिणाम का प्रभाव आने वाले चुनावों पर पड़ता है। प्रकाश सिंह बादल की भाजपा–अकाली दल सरकार ने लगातार दूसरी बार सत्ता प्राप्त कर एक इतिहास रचा है। हमें गोवा में शानदार विजय मिली है, जहां अल्पसंख्यक समुदाय ईसाई मतदाताओं वाले क्षेत्रों में भाजपा के प्रत्याशियों ने सहज ही विजय पाई है। दिल्ली में एक मुस्लिम कौंसिलर जीतीं हैं और एक और प्रत्याशी बहुत ही मामूली मतों से अविजित रहीं। उत्तराखण्ड में मामूली सी सीटें कम रहने से सत्ता से हाथ धोना पड़ा। यह सभी बातें दिखाती हैं कि आगामी चुनावों में मतदाताओं पर सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा।

क्या यह अकेले दिल्ली सरकार के खिलाफ वोट है?

नहीं, नहीं! यह वोट तो प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह के नेतृत्व में चल रही यूपीए–2 सरकार के खिलाफ भी उतने ही अधिक हैं। यह वोट तो केन्द्रीय गृहमंत्री श्री पी. चिदम्बरम के खिलाफ भी हैं क्योंकि कानून–व्यवस्था की हालत तो सीधे केन्द्र सरकार के हाथ में है। दिल्ली में कोई भी आदमी तो अपने को महफूज महसूस नहीं कर रहा है, चाहे वह छात्रा हो, महिला हो, वरिष्ठ नागरिक हो या आम आदमी हो। जैसा मैंने पहले भी कहा कि दिल्ली तो अपराधों की नगरी के नाम से मशहूर हो गई है।

क्या इन चुनावों के परिणाम इस वर्ष गुजरात और हिमाचल प्रदेश राज्यों के विधान सभाओं पर भी असर डालेंगे?

निश्चित ही! प्रत्येक चुनाव परिणाम का प्रभाव आने वाले चुनावों पर पड़ता है। प्रकाश सिंह बादल की भाजपा–अकाली दल सरकार ने लगातार दूसरी बार सत्ता प्राप्त कर एक इतिहास रचा है। हमें गोवा में शानदार विजय मिली है, जहां अल्पसंख्यक समुदाय ईसाई मतदाताओं वाले क्षेत्रों में भाजपा के प्रत्याशियों ने सहज ही विजय पाई है। दिल्ली में एक मुस्लिम कौंसिलर जीतीं हैं और एक और प्रत्याशी बहुत ही मामूली मतों से अविजित रहीं। उत्तराखण्ड में मामूली सी सीटें कम रहने से सत्ता से हाथ धोना पड़ा। यह सभी बातें दिखाती हैं कि आगामी चुनावों में मतदाताओं पर सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा।

गुजरात हाल के उप-चुनावों के परिणाम भी सकारात्मक रहे। आप इसे किस रूप में देखते हैं?

जैसा मैंने पहले कहा, यह सभी भाजपा के लिए अच्छे शकुन हैं।

उ.प्र. के चुनावों की हार से भाजपा ने क्या कुछ सीखा है?

क्या कुछ गलत रहा, इस बारे में हमने बहुत स्पष्ट और बेलाग बातचीत की है। हमने एक ही बात सीखी है कि पार्टी को पूरे जोश और उत्साह से एकजुट होकर सदैव चुनाव लड़ने चाहिए और जब आप विपक्ष में होते हैं तो आपको उन मुद्दों को उठाकर एक प्रभावकारी और रचनात्मक विपक्ष की भूमिका निभानी चाहिए, जो आम आदमी के दिल को छूते हैं।

मीडिया ने कुछ अटकलें लगाना शुरू कर दिया है कि भाजपा और एनडीए का प्रधानमंत्री का उम्मीदवार बनने की किस की सम्भावनाएं हैं?

मैं मीडिया की रिपोर्टों पर टिप्पणी नहीं करना चाहता हूं। जहां तक मुझे मालूम है, भाजपा ने अभी तक इस पर विचार नहीं किया है। पार्टी सभी नेताओं को विश्वास में लेकर सही समय पर सही निर्णय लेगी।

संगठन चुनाव का कार्यक्रम शुरू होने वाला है। इन संगठन चुनावों के प्रबंध को आप किस तरह से करेंगे?

पार्टी इस विषय पर विचार करेंगी।

आपकी शेष कार्यावधि में आपका मिशन क्या होगा?

इस वर्ष गुजरात और हिमाचल प्रदेश में अपनी भाजपा सरकारों को फिर से सत्ता में लाना सुनिश्चित करना तथा दिल्ली और राजस्थान में सत्ता में आने के लिए ठोस नींव तैयार करना और मध्य प्रदेश एवं छत्तीसगढ़ में फिर से सत्ता प्राप्त करना। इससे केन्द्र में भाजपा–नीत एनडीए सरकार को सत्ता में लाने का हमारा मार्ग प्रशस्त हो सकेगा।

अन्ना हजारे और बाबा रामदेव के अभियानों ने राज्य विधान सभा और दिननि के चुनाव परिणामों पर कितना प्रभाव पड़ा। इस बारे में आपका क्या ख्याल है?

श्री अन्ना हजारे और बाबा रामदेव द्वारा शुरू किए गए अभियान सामाजिक अभियान हैं। भ्रष्टाचार और काला धन के खिलाफ लोगों को एकजुट करने में इन्होंने एक प्रमुख भूमिका निभाई है। परन्तु, ये राजनैतिक अभियान नहीं हैं। सच तो यह है, इनका राजनीति से कोई लेना–देना नहीं है; इनकी कोई राजनैतिक महत्वाकांक्षा नहीं है। ये किसी राजनैतिक पार्टी या उम्मीदवार के पक्ष या विपक्ष के लिए प्रचार नहीं कर रहे हैं। भाजपा का भ्रष्टाचार से लड़ने का दृढ़ संकल्प तो सर्वविदित है ही! ■

भारत संयुक्त-श्रीलंका चाहता है : सुषमा स्वराज

ykकसभा में प्रतिपक्ष की नेता श्रीमती सुषमा स्वराज ने कोलम्बो में 20 अप्रैल को श्रीलंका के प्रेजीडेण्ट श्री महिन्द्रा राजपक्षे के साथ एक अनिर्धारित बैठक में मुलाकात की। श्रीलंका के प्रतिपक्ष के नेता रानिल विक्रम सिंघे से मुलाकात के तुरंत बाद ही यह बैठक हुई। श्रीमती स्वराज ने श्रीलंका के सभी तमिल नेताओं से मुलाकात की और अनौपचारिक रूप से पिछले चार दिनों में अनेक मंत्रियों और राजनेताओं के साथ मिलीं।

भारतीय संयुक्त संसदीय प्रतिनिधिमण्डल के हाल के दौरे के बाद श्री राजपक्षे ने श्रीमती सुषमा स्वराज को आमंत्रण दिया था ताकि वे उनसे अनौपचारिक माहौल में बातचीत कर सकें। श्रीमती स्वराज ने स्पष्ट कहा कि उनका प्रतिनिधिमण्डल संसद का प्रतिनिधिमण्डल है और हम एक संयुक्त–श्रीलंका को देखना चाहते हैं।

भारतीय संयुक्त संसदीय प्रतिनिफ्रिमण्डल के हाल के दौरे के बाद श्री राजपक्षे ने श्रीमती सुषमा स्वराज को आमंत्रण दिया था ताकि वे उनसे अनौपचारिक माहौल में बातचीत कर सकें। श्रीमती स्वराज ने स्पष्ट कहा कि उनका प्रतिनिफ्रिमण्डल संसद का प्रतिनिफ्रिमण्डल है और हम एक संयुक्त–श्रीलंका को देखना चाहते हैं।

18 अप्रैल को जाफना में एक मुलाकात में श्रीमती स्वराज ने कहा कि भारतीय संसद आतंकवाद के खिलाफ है और हम एक संयुक्त–श्रीलंका चाहते हैं।

उन्होंने बताया कि तमिल नेशनल एलाइंस के नेता श्री आर. संपंतन ने बार–बार दोहराया है कि हम संयुक्त–श्रीलंका के ढांचे में समाधान चाहते हैं। अगले दिन, अलुथगामा में रेलवे परियोजना की शुरूआत करते हुए उन्होंने कहा कि वास्तविक राजनैतिक समाधान आवश्यक है।

उन्होंने फिर अपनी इस प्रतिबद्धता को दोहराया कि भारत श्रीलंका के साथ पुनर्वास, पुनर्निर्माण और राष्ट्रीय विकास की प्रगति को बढ़ावा देने के लिए उसके साथ रहने का इच्छुक है।

भारत की पूर्ण सहमति

उन्होंने कहा कि भारत में सत्ताधारी दल और विपक्षी दल सभी उत्तरी प्रांतों के तमिलों के लिए राजनैतिक समाधान के मामले में पूर्ण सहमति रखते हैं। इस बैठक में भारतीय उच्चायुक्त अशोक के. कंथा, श्रीलंका के विदेश मंत्री जी. एल पीरीस और प्रेजीडेण्ट सचिव ललित वीरतुंगा उपस्थित थे।

19 अप्रैल को श्रीमती सुषमा स्वराज भारतीय मूल के तमिलों से मिलने हैटन गईं और वे पूर्वी क्षेत्र में तमिलों से बाटीकोला में मिलीं।

बाटीकोला में, उन्होंने एक वोकेशनल ट्रेनिंग स्कूल का उद्घाटन किया और युवा विधवाओं के लिए काम करने वाली एक स्वैच्छिक संगठन 'एसडब्ल्यूईए' से भी मिलीं।

पूर्वी प्रांतों के त्रिनकोमाली, बाटीकोला और अम्परा जिलों में 45,000 विधवाएं हैं। इनमें से लगभग 13,000 विधवाओं की आयु 23 वर्ष से भी कम है। ■

हिमाचल प्रदेश में लोकायुक्त विधेयक पारित

loknnkrk }kjk

Hkkरतीय जनता पार्टी के लिए सुशासन केवल घोषणा–पत्र के शब्द नहीं है अपितु पार्टी इस पर अमल करने को लेकर प्रतिबद्ध है। उत्तराखंड की पिछली भाजपा सरकार ने लोकायुक्त विधेयक पारित कर जहां पार्टी के संकल्प को साकार किया था वहीं हिमाचल प्रदेश की भाजपा सरकार ने भी इसे पारित कर इतिहास रच दिया है। गौरतलब है कि हिमाचल प्रदेश विधानसभा ने बजट सत्र के आखिरी दिन 6 अप्रैल को विधानसभा में लोकायुक्त विधेयक पारित किया। विधानसभा अध्यक्ष तुलसीराम शर्मा ने जब सदन में लोकायुक्त विधेयक पर सदस्यों से चर्चा करने के लिए कहा तो उस समय केवल सत्ता पक्ष के ही सदस्य उपस्थित थे और विपक्ष के सदस्य नदारद। सत्ता पक्ष की ओर से विधायक सुरेश भारद्वाज व खुशीराम बालनाहटा ने चर्चा में भाग लिया। लोकायुक्त पर चर्चा का जवाब देते हुए मुख्यमंत्री प्रेम कुमार धूमल ने चर्चा में भाग न लेने के लिए कांग्रेसियों की आलोचना की।

विधेयक में हाईकोर्ट की तरह लोकपाल में भी अब फुल बैंच की व्यवस्था की गई है और फुल बैंच में लोकायुक्त और दोनों उपलोकायुक्त शामिल होंगे। लोकपाल के लिए जहां सुप्रीमकोर्ट का जज या हाईकोर्ट का मुख्य न्यायाधीश होना अनिवार्य बनाया गया है, वहीं उपलोकायुक्त बनाए जाने के लिए सरकार के सचिव स्तर के अधिकारी की 25 वर्ष के सेवाकाल की शर्त लगाई गई है। लोकायुक्त और उपलोकायुक्त की नियुक्तियां मुख्यमंत्री, विपक्ष के नेता और हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश तीनों मिल कर करेंगे परंतु इससे पहले जिन व्यक्तियों के नामों पर यह 3 सदस्यीय कमेटी विचार करेगी उन्हें एक सर्च कमेटी के माध्यम से तय किया जाएगा। इस सर्च कमेटी का गठन भी यही कमेटी इन नामों को तय करने के लिए करेगी।

सर्च कमेटी जिन नामों पर लोकायुक्त या उपलोकायुक्तों की नियुक्तियों के लिए विचार करेगी उनकी सारी सूचनाएं जन साधारण की सूचना के लिए वैबसाइट पर डाली जाएंगी और उस संबंध में सूचनाओं और आपत्तियों के लिए जनता को 15 दिनों का समय दिया जाएगा। लोकायुक्त को हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश और उपलोकायुक्तों को हाईकोर्ट के न्यायाधीश के वेतन के बराबर वेतन देना विधेयक में प्रस्तावित है।

विधेयक में लोकायुक्त के पास इन्वैस्टीगेटिंग और प्रॉसीक्यूटिंग अधिकारियों की नियुक्ति का प्रस्ताव किया गया है और लोकायुक्त को सिविल न्यायालय की शक्तियां भी दी गई हैं जिनके माध्यम से लोकायुक्त किसी भी व्यक्ति को गवाही आदि के लिए बुला सकता है।

भ्रष्टाचार के किसी मामले का लोकायुक्त द्वारा निपटारा कर दिए जाने के बाद दोषयुक्त करार दिया कोई व्यक्ति लोकायुक्त से जुड़े किसी अधिकारी या व्यक्ति पर उस पर गलत आरोप लगाने के लिए कानूनी कार्रवाई नहीं कर सकेगा। भ्रष्टाचार की शिकायत या सूचना मिलने पर लोकायुक्त को 'सुओमोटो' जांच के आदेश दे सकता है जबकि शिकायत मिलने पर जांच करवाने की विधेयक में व्यवस्था है और यदि शिकायतकर्त्ता का अनुरोध उसका नाम गुप्त रखने और उसे सुरक्षा देने बारे हो तो लोकायुक्त शिकायतकर्त्ता के नाम को गुप्त भी रखेगा और उसे सुरक्षा प्रदान करने के आदेश संबंधित विभाग को देगा परंतु यह स्पष्ट किया गया है कि बेनामी या फर्जी नामों से की गई शिकायतों पर कोई कार्रवाई नहीं करने की बात विधेयक में कही गई है।

शेष पृष्ठ 18 पर

हताश करने वाला माहौल

x|jpj.k nkl

संप्रग सरकार के मंत्रियों के लिए कुछ सुझाव हैं, जिन्होंने विश्व में भारत की साख को मिट्टी में मिला दिया है। ढाई साल पहले नौ फीसदी की भारत की विकास दर को दिसंबर 11 की तिमाही में 6.1 के स्तर पर लाने के दौरान बहुत कुछ घट गया है। विकास दर में एक प्रतिशत की गिरावट का मतलब है करीब 15 लाख लोगों की रोजगार से छुट्टी। इसमें हैरत की बात नहीं है कि संप्रग सरकार के कार्यकाल में देश ने बेहद तकलीफ और पीड़ा झेली है।

भ्रष्टाचार का सिलसिला रुकने का नाम नहीं ले रहा है, किंतु असल त्रासदी है कानून के शासन में गिरावट। कभी भारत की ताकत रहा कानून का शासन अब पतन की ओर अग्रसर है। इस सरकार ने वोडाफोन टैक्स मामले में सुप्रीम कोर्ट के फैसले को पलटकर कानून के शासन की अवमानना की। सुप्रीम कोर्ट के आदेश के बाद सरकार ने कानून में बदलाव का फैसला किया। सरकार ने 1962 के बाद से इस प्रकार के सौदों पर कर लगाना तय किया। इस साल के बजट में केयर्न कंपनी को पेट्रोलियम पदार्थो पर प्रति टन 90 डॉलर कर चुकाने का फैसला भी उतना ही अनुचित था, जबकि अन्य निजी कंपनियां महज 18 डॉलर प्रति टन कर ही दे रही हैं।

इसी प्रकार कुछ कंपनियों को पहले पर्यावरण की अनुमति दे दिए जाने के बाद अब उनके मामले दोबारा खोल दिए गए, किंतु जब एक दशक के प्रयोगों के बाद बीटी बैंगन विकसित करने वाली महाराष्ट्र हाइब्रिड सीड कंपनी को लाइसेंस देने से मना कर दिया गया तो विश्व वैज्ञानिक समुदाय हताश–निराश हो गया। यह कंपनी विभिन्न स्वतंत्र एजेंसियों द्वारा किए जाने वाले पर्यावरण संबंधी 25 अध्ययनों पर खरी उतरी है।

इसके अलावा खेतों में दो विश्वविद्यालयों द्वारा किए गए सघन प्रयोगों और सरकार के तमाम मानकों पर कंपनी खरी उतरी है। इनके अलावा नॉर्वे की कंपनी टेलीनॉर के प्रति पूरे विश्व में सहानुभूति है, जो सुप्रीम कोर्ट के फैसले का शिकार हो गई है। 2जी स्पेक्ट्रम मामले में भ्रष्ट तरीके से लाइसेंस जारी करने के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट ने उस दौरान के तमाम लाइसेंसों को रद्द कर दिया था, जबकि टेलीनॉर के तस्वीर में आने से पहले ही भ्रष्टाचार हो चुका था।

पहले तो टेलीनॉर ने एक संयुक्त उपक्रम में शेयर खरीदे और फिर बाजार में 12 हजार करोड़ रुपये झोंक दिए। बाद की घटनाओं से यह इतनी परेशान हुई कि उसने अंतरराष्ट्रीय पंचाट के माध्यम से भारत सरकार पर 70 हजार करोड़ रुपये का दावा ठोक दिया। एक सभ्य समाज में नागरिक सरकार से यह अपेक्षा रखते हैं कि वह उनके जीवन की अस्थिरता पर अंकुश लगाएगी। इसके लिए सशक्त कानून के शासन की आवश्यकता पड़ती है। एक उद्यमी के जीवन में अनिश्चितता भर गई है।

इसीलिए भारत में चार में से तीन उद्यमियों के धंधे विफल हो रहे हैं, किंतु भारत में सबसे बड़ा खतरा सरकार की तरफ से ही खड़ा किया जा है। प्रमुख कारण यह है कि कानून का शासन कमजोर पड़ गया है और यह शासकों की मनमानी पर अंकुश नहीं लगा पा रहा है। भ्रष्टाचार कमजोरी का लक्षण है। नागरिक अपने जीवन में अनिश्चितता

> ***संश्ग सरकार के मंत्रियों के लिए कुछ सुझाव हैं, जिन्होंने विश्व में भारत की साख को मि'ी में मिला दिया है। ढाई साल पहले नौ फीसदी की भारत की विकास दर को दिसंबर 11 की तिमाही में 6.1 के स्तर पर लाने के दौरान बहुत कुछ घट गया है। विकास दर में एक श्तिशत की गिरावट का मतलब है करीब 15 लाख लोगों की रोजगार से छु'ी। इसमें हैरत की बात नहीं है कि संश्ग सरकार के कार्यकाल में देश ने बेहद तकलीफ और पीड़ा झेली है। भ्रष्टाचार का सिलसिला रुकने का नाम नहीं ले रहा है, किंतु असल त्रासदी है कानून के शासन में गिरावट।***

घटाने के लिए सरकार पर निर्भर होते हैं। राज्य कानून के शासन के दम पर इसे लागू करता है, किंतु वर्तमान भारत सरकार इसे लागू करने में कामयाब नहीं हो रही है। इसीलिए चार में से तीन व्यापारी विफल हो जाते हैं। दरअसल, संप्रग सरकार अनिश्चितता को घटाने के बजाए खुद ही अनिश्चय का प्रमुख स्त्रोत है। इसके अहंकारी मंत्रियों ने कानून के शासन को कमजोर कर दिया है।

परिणामस्वरूप घोटालों का सिलसिला सामने है। जब कानून का शासन मजबूत होता है तो भ्रष्टाचार पैदा नहीं होता। कुछ लोग सोचते हैं कि यह तो होना ही है। वे कहते हैं कि कानून का शासन तो एक आयातित विचार है, जो ब्रिटिश राज के साथ–साथ यहां पहुंचा।

अंग्रेजों के जाने के बाद यह फलने–फूलने लगा। जब ए. राजा और सुरेश कलमाडी जैसे मंत्री–अधिकारी यह सोचने लगे कि वे कानून के शासन के ऊपर हैं तो कानून का शासन ध्वस्त हो जाता है। कानून का शासन एक नैतिक अवधारणा है और इसे आदत के रूप में विकसित किया जाना चाहिए। एक सफल लोकतंत्र नैतिक मतैक्य पर निर्भर करता है, जहां लोग कानून के शासन का पालन दंड के भयवश नहीं करते, बल्कि इसलिए करते हैं, क्योंकि वे मानते हैं कि यह न्यायोचित है। जल्द ही यह एक आदत के रूप में विकसित हो जाती है।

संश्ग सरकार अनिश्चितता को घटाने के बजाए खुद ही अनिश्चय का श्मुख स्त्रोत है। इसके अहंकारी मंत्रियों ने कानून के शासन को कमजोर कर दिया है। परिणामस्वरूप घोटालों का सिलसिला सामने है। जब कानून का शासन मजबूत होता है तो भ्रष्टाचार पैदा नहीं होता। कुछ लोग सोचते हैं कि यह तो होना ही है। वे कहते हैं कि कानून का शासन तो एक आयातित विचार है, जो ब्रिटिश राज के साथ–साथ यहां पहुंचा। अंग्रेजों के जाने के बाद यह फलने–फूलने लगा। जब ए. राजा और सुरेश कलमाडी जैसे मंत्री–अफ्रिकारी यह सोचने लगें कि वे कानून के शासन के)पर हैं तो कानून का शासन फ्रवस्त हो जाता है।

भारत में हमेशा से कानून के शासन को धर्म के रूप में अभिव्यक्त किया जाता है, जिसका सीधा–सीधा संबंध जनजीवन से है। इसी कारण भारत के संविधान के रचियता अपने भाषणों में अकसर धर्म शब्द का इस्तेमाल करते थे। महान विद्वान पीवी काणे, जिन्हें भारत रत्न से भी नवाजा गया है, संविधान को धर्म शास्त्र कहा करते थे। कानून के शासन की जड़ें धर्म में हैं। पश्चिम में यह ईसाइयत में उभरा। आधुनिक यूरोपीय राष्ट्रों के गठन से काफी पहले पोप ग्रेगरी प्रथम ने विवाह और उत्तराधिकार संबंधी कानून बनाए थे।

चर्च ने पुराने जस्टिनियन नियमों की भी खोज की, जो आधुनिक यूरोप के नागरिक कानूनों का आधार बने। फ्रेडरिक मेटलैंड का कहना है कि कानून के शासन की उच्च वैधानिकता इसलिए है, क्योंकि यह धर्म से पैदा हुआ है। धर्म का जन्म पंथ (रिलिजन) से हुआ है। यह आज की पंथनिरपेक्ष नागरिक ड्यूटी का मानक बन गया है। इसमें कुछ चौंकाने वाले उदार तत्व भी हैं। प्राचीन काल में धर्म में राष्ट्र की शक्ति निहित थी, जैसे राजधर्म। धर्म राष्ट्र से भी ऊंचा था। इसे संप्रभुता की संप्रभुता भी कहा जाता था। शास्त्रों में यह भी लिखा है कि शासक संप्रभु नहीं है, धर्म है।

संप्रग सरकार के कुछ मंत्री इस विचार पर विमर्श करें तो उनका भला होगा। इस्लामी सभ्यता का मूल तत्व भी कानून का शासन ही है। यह न्याय का परम स्त्रोत है और इसने राजनीतिक शासकों का कई बार विरोध भी किया है, किंतु मुस्लिम और हिंदू सभ्यताएं आधुनिकता को आत्मसात नहीं कर पाईं। इसका एक कारण यह है कि इन्हें धर्म और राष्ट्र के बीच स्वायत्तता हासिल नहीं हुई। इसी कारण साम्राज्यवादी शासन ने भारत और मुस्लिम राष्ट्र को विभाजन को मजबूर कर दिया। शासक के धर्म से निर्देशित होने का विचार आज भी भारतीय जनमानस में मौजूद है। इसका श्रेय हमारी सभ्यता की असाधारण निरंतरता को जाता है। परंपरागतता और आधुनिकता के मेल से भारतीय जनमानस से विलुप्त हो रहे नैतिक मूल्यों को कायम रखने में मदद मिलेगी। इससे आधुनिक कानून का शासन लागू होने के साथ–साथ भारत के लोकतंत्र को भी पुनर्जीवन मिलेगा। ■

¼y[k e idkf'kr fopkj l ge i.kr½ lger ugh gA nfud tkxj.k e idkf'kr ;g y[k fopkjÙkd g blfy, ge bl idkf'kr dj jg g&l½

राजकीय मेहमान बना कसाब!

, l- x|:efr

Vजमल आमिर कसाब अब एक बार फिर सुर्खियों में है। कुछ दिनों पहले मीडिया में खबर आई कि मुम्बई पुलिस ने पिछले तीन साल से अपने छह रसोइयों को बिना किसी अनुमति के आर्थर रोड जेल में बंद कसाब की सेवा में लगा दिया था। ये रसोइये दोषी ठहराए गए इस युवा (कसाब) के लिए 'विशेष खाना' बनाते थे। यह सब ऐसे वक्त हुआ, जब मुम्बई पुलिस के जवान रसोइये की कमी से जूझ रहे थे। पुलिस, अस्पताल और इमर्जेन्सी में भी बावर्चियों की भारी कमी है।

कसाब और अन्य नौ आतंककारियों ने 26 नवम्बर 2008 को मुम्बई के दो होटलों, छत्रपति शिवाजी रेलवे स्टेशन और अन्य स्थानों पर हमला किया था। इन हमलों में 166 लोग मारे गए थे। हत्या की यह वारदात रीयल्टी शो की तरह चैनलों पर दिखाई गई थी। कसाब रंगेहाथ गिरफ्तार किया गया था। इसके आगे और कोई सबूत की जरूरत नहीं थी। 18 माह तक चले ट्रायल के बाद उसे दोषी ठहराते हुए मृत्युदंड की सजा दी गई। मुम्बई हाईकोर्ट ने फरवरी 2011 में मृत्यदंड की पुष्टि कर दी। कसाब ने जुलाई 2011 में सुप्रीम कोर्ट में अपील दाखिल कर दी। अपने ही बनाए कानून की प्रक्रिया के तहत सुप्रीम कोर्ट ने कसाब को फांसी देने पर रोक लगा दी। कानून की प्रक्रिया की क्या वजह है? जब कसाब का दोष सिद्ध हो गया, तो फिर एक ही उत्तर है, उसे फांसी पर चढ़ा देना चाहिए।

1983 में सुप्रीम कोर्ट ने कहा था कि मृत्युदंड असाधारण से असाधारण मामलों में ही दिया जाना चाहिए। मानवाधिकार कार्यकर्ताओं ने इस निर्णय को महिमामंडित करते हुए कहा था कि भारत और सभ्य हो गया है। इस निर्णय के परिणामस्वरूप अनेक दोषियों के मृत्युदंड को आजीवन कारावास में बदल दिया गया था। खबरों के अनुसार तीन सौ ऐसे दोष सिद्ध अपराधी कतार में जल्लाद के सामने हैं, जिन्हें फांसी दी जानी है। इसमें राजीव गांधी का हत्यारा भी शामिल है। फिर भी पिछले सत्तरह सालों में सिर्फ एक अपराधी को फांसी दी गई। संयोग से यह 'असाधारण मामलों में से असाधारण' निर्णय था।

देखिए– मृत्यदंड के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट के किस तरह के 'शानदार' कानून ने कसाब में आशा का संचार किया है। कोर्ट ने अपने निर्णय में कहा है कि मृत्यदंड पर फेरबदल करने के लिए सोच विचार करते समय हत्यारे की उम्र प्रासंगिक होगी। हालांकि, यह निर्धारक नहीं है। इन सबके बाद भी कसाब ने जब इस नरसंहार को अंजाम दिया, तब उसकी उम्र 21 साल थी? सुप्रीम कोर्ट ने उम्र मुद्दे पर कसाब के लिए एक वकील नियुक्त किया था। यह गम्भीरता कम करने वाला कारक था। वकील ने अपनी दलील में कहा कि कसाब ने इस घटना को अंजाम अपनी ओर से नहीं दिया, बल्कि 'आड़े–तिरछे धार्मिक विश्वास और गलत आदर्शवाद' के प्रभाव में आकर उसने यह कृत्य किया। 'आड़े–तिरछे धार्मिक विश्वास' का मतलब कसाब अपराधी नहीं है? क्या ये सब उसको बचाने के लिए गम्भीर कारक हैं? कोर्ट के सामने यह एक मुद्दा है। कोर्ट के कड़े नियत नियमों को धन्यवाद, कसाब का मामला लटक गया, जो मुम्बई की आर्थर रोड जेल में राज्य मेहमाननवाजी भोग रहा है।

अजमल आमिर कसाब अब एक बार फिर सुर्खियों में है। कुछ दिनों पहले मीडिया में खबर आई कि मुम्बई पुलिस ने पिछले तीन साल से अपने छह रसोइयों को बिना किसी अनुमति के आर्थर रोड जेल में बंद कसाब की सेवा में लगा दिया था। ये रसोइये दोषी ठहराए गए इस युवा ञकसाबफ के लिए 'विशेष खाना' बनाते थे। यह सब ऐसे वत्त हुआ, जब मुम्बई पुलिस के जवान रसोइये की कमी से जूझ रहे थे। पुलिस, अस्पताल और इमर्जेन्सी में भी बावर्चियों की भारी कमी है।

आइए अब, दूसरा पक्ष देखते हैं– कसाब मुम्बई हमलों का एकमात्र जीवित आतंककारी है, जिसे पकड़ा जा सका। लश्करे–तैयबा और आईएसआई की लिप्तता का वह एकमात्र सबूत है। बहादुर पुलिस इंस्पेक्टर, जिसने कसाब की एके–47 से निकली गोलियों की बौछार सही, वह तुकाराम ओम्बले थे। ओम्बले को 26/11 के एक साल पूरे होने के पहले ही भुला दिया गया। इस बात का सबूत गृहमंत्री पी. चिम्बरम का लोकसभा में दिया बयान है। उन्होंने सदस्यों से कहा, ‘आप में से कितने लोग तुकाराम ओम्बले को अभी भी याद करते हैं, जो बंदूक के बैरल पर झपट पड़े थे और सीने पर गोलियां खाते हुए अपने सहयोगी पुलिसकर्मियों को अजमल कसाब पर टूट पड़ने को कहा था?’ आज शहीद ओम्बले को याद करने वाले चुनिंदा लोग होंगे।

विडम्बना है कि कसाब का मामला भारत–पाक सम्बन्धों में एक मुद्दे के रूप में उभर रहा है। यह ठीक उसी तरह है जब गत वर्ष अमरीकी राजनयिक रैमण्ड डेविस पाकिस्तान में हत्या के दोषी ठहराए गए थे और यह मुद्दा अमरीका–पाक सम्बन्धों में उभर आया था। अमरीका ने डेविस को ‘राज्यक्षमा’ के लिए 1.4 मिलियन डॉलर का भुगतान किया। अफगानिस्तान में भी यही हुआ। कंधार हत्याकांड में अमरीकी सैनिकों की लिप्तता सामने आई थी। इस नरसंहार में 17 अफगानी मारे गए थे। अमरीकियों को मारे गए हर अफगानी परिवार को 46 हजार डॉलर और घायलों को इसकी चौथाई राशि देनी पड़ी थी, तभी माफी मिल सकी। भविष्य में इस तरह के समझौते आसान करने के लिए सऊदी अरब ने सितम्बर 2011 से दियात की राशि 29,330 डॉलर से बढ़ाकर 1,06,654 डॉलर कर दी है।

सऊदी अरब ही वैश्विक इस्लामिक कानूनी मापक तय करता है। यह राशि ऊंटों की कीमत बढ़ने के कारण बढ़ाई गई है। ऊंट ही क्यों? इसलिए कि दियात के भुगतान में एक आदमी के जान की कीमत 100 ऊंटों की कीमत के बराबर है। लेकिन महिलाओं के जान की कीमत उसकी आधी है। अब इस दर को 26/11 के मुम्बई हमलों पर लागू कीजिए।

हमले में 166 लोग मारे गए, यानी यह संख्या 16,600 ऊंट के बराबर है, जिसका सऊदी अरब में वर्तमान कुल मूल्य 18 मिलियन डॉलर के आसपास पहुंचता है। अमेरिका ने जो पाकिस्तान और अफगानिस्तान में किया, यदि उसी तरह पाकिस्तान भी अजमल कसाब को बचाने के लिए 18 मिलियन डॉलर के समझौते की पेशकश करे, तो यहां मानवाधिकार कार्यकर्ता क्या कहेंगे? दियात कानून कसाब के शिकार हुए लोगों को सौ–सौ ऊंटों की दर के बराबर क्षतिपूर्ति करेगा! मानवाधिकार के कार्यकर्ता (कानून रहित) कसाब को आजाद करेंगे, फ्री ऑफ कॉस्ट। ये तो दियात कानून से भी ज्यादा उदारवादी हैं, क्या ऐसा नहीं है?

¼y[kd tkus&ekus [kkth i=dkj o d,jikjV lykgdkj g½

अमेरिका ने जो पाकिस्तान और अफगानिस्तान में किया, यदि उसी तरह पाकिस्तान भी अजमल कसाब को बचाने के लिए 18 मिलियन डॉलर के समझौते की पेशकश करे, तो यहां मानवाफ्रिकार कार्यकर्ता क्या कहेंगे? दियात कानून कसाब के शिकार हुए लोगों को सौ–सौ)टों की दर के बराबर क्षतिपूर्ति करेगा! मानवाफ्रिकार के कार्यकर्ता ज्ञकानून रहितप कसाब को आजाद करेंगे, भी ऑफ कॉस्ट। ये तो दियात कानून से भी ज्यादा उदारवादी हैं, क्या ऐसा नहीं है?

हुकुम सिंह बने उ.प्र. भाजपा विधानमंडल दल के नेता

गत 11 अप्रैल 2012 को उत्तर प्रदेश भाजपा के वरिष्ठ नेता व विधायक श्री हुकुम सिंह को भारतीय जनता पार्टी विधानमंडल दल का सर्वसम्मति से नेता चुना गया। पार्टी के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री कलराज मिश्र ने श्री सिंह के नाम का प्रस्ताव किया जिसका अनुमोदन सर्वश्री सुरेश खन्ना, लक्ष्मीकांत बाजपेई, राजेश अग्रवाल, राधामोहन दास अग्रवाल और सतीश महाना समेत सभी विधायकों ने किया। श्री सिंह मुजफरनगर जिले की कैराना सीट से विधायक चुने गए हैं। इनके नेता चुने जाने के अवसर पर पार्टी के पर्यवेक्षक के रूप में भाजपा के राष्ट्रीय महामंत्री एवं उत्तर प्रदेश प्रभारी श्री नरेन्द्र सिंह तोमर और भाजपा के राष्ट्रीय महामंत्री श्री थावर चन्द गहलोत मौजूद थे।■

लाल आतंक के सफाए के लिए राजनीतिक इच्छाशक्ति की जरूरत

& tkfxUæ flag

yk ल आतंक का सफाया करने के लिए सरकार को राजनीतिक इच्छाशक्ति और पक्के इरादे की जरूरत है। जब तक ऐसा नहीं होता, तब तक माओवादियों का कहर जारी रहेगा। कुछ दिन पहले चंडीगढ़ में केन्द्रीय गृहमंत्री पी. चिदम्बरम ने कहा था कि माओवादियों को बड़े व्यापारी घरानों द्वारा धन उपलब्ध कराना एक 'निंदनीय' कार्य है। उन्होंने कहा था कि राज्य सरकारों को इस के खिलाफ कार्रवाई करनी चाहिए। आपको याद होगा कि माओवाद से प्रभावित इलाकों से होकर गुजरने वाली पाइप लाइन के जरिए लोहे का चूरा विशाखापत्तनम ले जाने के लिए दंतेवाड़ा में एस्सार ग्रुप ने विशाल कारखाना लगाया है। पुलिस ने आरोप लगाया है कि यह कम्पनी माओवादियों को संरक्षण के लिए धन दे रही है, जिससे कि पाइप लाइन का उनका काम सही तरीके से चलता रहे।

जांच कर रही एक विशेष टीम ने कम्पनी के एक वरिष्ठ अधिकारी के खिलाफ चार्जशीट दाखिल की है, जिसमें राजद्रोह सहित विद्रोहियों को 'वित्तीय मदद' देने के आरोप शामिल हैं। बचाव में इस अधिकारी ने जांच टीम को बताया कि वह माओवादियों को व्यक्तिगत तौर पर नहीं, बल्कि कम्पनी की ओर से धन दे रहा था। पहली बार किसी कम्पनी पर माओवादियों को धन देने के आरोपों की जांच की जा रही है। माओवादियों को 'मानवाधिकारों के निकृष्टम उल्लंघनकर्ता' बताते हुए गृहमंत्री ने खेद जताते हुए कहा था कि सुरक्षा बलों की ज्यादतियों की ओर तो काफी ध्यान दिया जाता है, लेकिन कथित पुलिस भेदियों के नाम पर आम नागरिकों की हत्या के मामलों पर 'मीडिया और अदालतों में उतना ध्यान नहीं दिया जाता।' दो साल पहले, 2010 में माओवादियों द्वारा किए गए हमलों की पृष्ठभूमि में जिनमें छत्तीसगढ़ में चिंतागुफा का भीषण हमला भी शामिल था, जिसमें सीआरपीएफ के 75 जवान और एक सिपाही मारा गया था, प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने कहा, 'हाल की घटनाओं में इस समस्या के सफाए के लिए तत्काल और सुविचारित कार्रवाई की जरूरत है। भारतीय राष्ट्र की सत्ता को और देश के लोकतांत्रिक ढांचे को चुनौती देने वालों के प्रति किसी प्रकार की सहानुभूति नहीं दर्शाई जा सकती।'

लाल आतंक का सफाया करने के लिए सरकार को राजनीतिक इच्छाशक्ति और पक्के इरादे की जरूरत है। जब तक ऐसा नहीं होता, तब तक माओवादियों का कहर जारी रहेगा।

जरा बड़े माओवादी हमलों और उनके हिंसक कृत्यों पर एक नजर डालें। 29 tu 2008% माओवादियों ने चार पुलिस अधिकारियों और 60 ग्रेहाउंड कमांडों को ले जा रही एक नाव पर ओडिशा में बालीमेला झील में हमला किया और 38 पुलिस कर्मियों को मार डाला। 16 tqykbZ 2008 % ओडिशा के मलकानगिरि जिले में एक पुलिस वैन पर हमले में माओवादियों ने 21 पुलिस कर्मियों को मार दिया। 22 ebZ 2009% माओवादियों ने महाराष्ट्र के गढ़ चिरौली के जंगलों में 16 पुलिसकर्मियों को मौत के घाट उतार दिया। 16 tqu 2009% माओवादियों ने बारूदी सुरंग के विस्फोट में 11 पुलिस अधिकारियों को

मारा और उसके बाद हथियारों से लैस माओवादियों ने एक हमला किया। पलामू जिले में बेहेड़ाखंड में घात लगा कर किए गए एक अलग हमले में चार पुलिस कर्मी मारे गए और दो अन्य गम्भीर रूप से घायल हो गए। 8 vDVwcj 2009% महाराष्ट्र के गढ़ चिरौली जिले मे लहेरी थाने पर घात लगा कर किए गए माआवादियों के हमले में सत्रह पुलिसकर्मी मार गए। 2009 में माओवादियों के हमलों में कुल मिलाकर 591 नागरिक और 317 सुरक्षाकर्मी मारे गए। कितने ही पुलिसकर्मियों के सिर कलम कर दिए गए और रेलगाड़ियों तक का अपहरण कर लिया गया। 15 Qjojh 2010% पश्चिम बंगाल के पश्चिम मिदनापुर जिले में ईस्टर्न फ्रंटियर राइफल्स के सिल्दा कैम्प पर माओवादियों के हमले में 24 कर्मी मारे गए। 6 vizy 2010% छत्तीसगढ़ के दंतेवाड़ा जिले में एक माओवादी हमले में 75 सीआरपीएफ जवान और छत्तीसगढ़ का एक पुलिस अधिकारी मारा गया। 2010 का साल, माओवादी हमलों के इतिहास में सर्वाधिक खूनखराबे वाला साल रहा, जिसमें 1,169 लोग मरे। मारे गए लोगों के हिसाब से इस साल सुरक्षा बलों ने 2010 में अपने 285 जवानों को गंवाया, जबकि माओवादियों के 2009 में 219 से भी कम सदस्यों की तुलना में 171 माओवादी ही मारे गए।

हाल ही में, इटली के नागरिकों और ओडिशा के एक विधायक का अपहरण, माओवादियों के अपराधों का एक ताजा उदाहरण है। इटली के एक नागरिक को छोड़ दिया गया है, लेकिन उसकी रिहाई की शर्तें आज तक अनिश्चित–सी रही हैं। माओवादियों से निपटने के यूपीए सरकार के ठोस इरादों की घोषणा, एक मजाक लगने लगी है। माओवादियों जैसे खतरों से निपटने के दुनिया को सिर्फ दो ही तरीके आते हैं। बल प्रयोग या शांति वार्ता। भारत का राजनीतिक तबका दुविधा में है कि कौन–सा तरीका अपनाया जाए।

माओवादियों से निपटने के यूपीए सरकार के ठोस इरादों की घोषणा, एक मजाक लगने लगी है। माओवादियों जैसे खतरों से निपटने के दुनिया को सिर्फ दो ही तरीके आते हैं। बल प्रयोग या शांति वार्ता। भारत का राजनीतिक तबका दुविफ्रा में है कि कौन–सा तरीका अपनाया जाए।

केन्द्रीय गृहमंत्री ने माओवादी समस्या से निपटने के लिए एक व्यापक जनादेश मांगा था, जिसमें जमीनी आपरेशनों के लिए हवाई मदद को भी शामिल किया गया था, लेकिन पश्चिम बंगाल, आंध्र प्रदेश, महाराष्ट्र छत्तीसगढ़ और ओडिशा जैसे माओवाद–प्रभावित राज्यों के मुख्यमंत्रियों के आग्रह के बावजूद इस प्रकार का जनादेश देने से इंकार कर दिया गया। गृहमंत्री की मानें तो उन्हें 'सीमित जनादेश' दिया गया था या यूं कहें कि उन्हें झिड़क दिया गया था। नतीजा यह हुआ है कि माओवादियों के खिलाफ नाम मात्र के आपरेशन चलाए जा रहे हैं इसलिए कम्पनियों और आम आदमी को अगर यह विश्वास है कि सरकार तो उनकी रक्षा नहीं ही कर पाएगी, लेकिन माओवादी उन्हें मार जरूर देंगे, तो इसमें हैरानी की कौन–सी बात है। इसलिए वे दूसरी ओर मुंह फेर लेते हैं, ताकि माओवादी खुश रहें। ■

¼iatkc dsljh ls lkHkkj½

पृष्ठ 18 का शेष...

शिकायत झूठी पाई जाने पर शिकायतकर्त्ता पर विशेष न्यायालय में मुकद्दमा चलाया जा सकता है तथा दोषी पाए जाने पर 1 साल की कैद या 10 लाख जुर्माना या दोनों हो सकते हैं। विधेयक में यह भी कहा गया है कि मुख्यमंत्री, मंत्रियों, मुख्य संसदीय सचिवों व विभागाध्यक्षों के खिलाफ शिकायतों पर लोकायुक्त के फुल बैंच की संस्तुति के बाद ही कोई जांच या कार्रवाई होगी जबकि अन्य के खिलाफ किसी भी भ्रष्टाचार या पद के दुरुपयोग की शिकायत की जांच लोकायुक्त द्वारा तय दिशा–निर्देशों के अनुरूप होगी। उल्लेखनीय है कि मुख्यमंत्री से लेकर पंचायत के चुने हुए पंच तक को ऐसी किसी जांच के लिए लोकायुक्त के दायरे में लाया गया है। विधेयक के अनुसार लोकायुक्त या उपलोकायुक्त का कार्यकाल 5 वर्ष का रखा गया है और इनके लिए आयु सीमा 70 वर्ष रखी गई है। कार्यकाल पूरा करने के बाद पैदा हुई रिक्ति को 3 माह में पुनः भर जाने की व्यवस्था है।

लोकायुक्त या उपलोकायुक्त को विधानसभा द्वारा सदन में उपस्थित 2 तिहाई विधायकों के बहुमत से हटाए जाने की सिफारिश राज्यपाल को करने की व्यवस्था है। ■

सुशासन की परिकल्पना को मूर्तरूप देना भाजपा की सर्वोच्च प्रतिबद्धता : अनंत कुमार

&lokn nkrk }kjk

Hkkरतीय जनता पार्टी की दो दिवसीय प्रदेश कार्यसमिति बैठक 7 एवं 8 अप्रैल 2012 को रामराजा सरकार के दरबार ओरछा में सुशासन के संकल्प को साकार करने के साथ संपन्न हुई। भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव और प्रदेश प्रभारी श्री अनंत कुमार, मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान, प्रदेश अध्यक्ष और सांसद श्री प्रभात झा ने ध्वजारोहण कर विधिवत कार्यसमिति की बैठक की शुरूआत की।

बैठक के उदघाटन सत्र में भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव और प्रदेश प्रभारी श्री अनंत कुमार ने कहा कि मध्य प्रदेश सुशासन और रामराज्य की ओर बढ रहा है। मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान के नेतृत्व में हम प्रदेश की इस कल्पना को साकार कर रहे हैं। देखा जाये तो पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय के शासनकाल में मध्यप्रदेश की विकास दर शून्य थी और आज शिवराजसिंह चौहान के नेतृत्व में विकास की दर 10 प्रतिशत पर पहुंची है। उन्होंने कहा कि अनके उपलब्धियां है जो भाजपा की प्रदेश सरकार ने अर्जित की है, लेकिन हमें इन योजनाओं को प्रचारित भी करना और प्रसारित करते हुए प्रदेश की साढे सात करोड़ जनता से संवाद स्थापित करना है। जिससे जनता इस सुखद बदलाव को आत्मसात कर सकें।

श्री अनंत कुमार ने केन्द्र सरकार पर तीखे प्रहार करते हुए कहा कि पहली बार केंन्द्र में नेतृत्वविहीन सरकार है। नेहरू और गांधी के जमाने में जो दुर्दशा सरकार की नहीं हुई थी उससे भी बुरी दुर्दशा आज केन्द्र सरकार की हो रही है। उत्तरप्रदेश में कांग्रेस का करिश्मा चूर चूर हुआ है। कांग्रेस जनसमर्थन भी नहीं जुटा पायी है। धीरे–धीरे कांग्रेस का जनसमर्थन खिसक रहा है वहीं केन्द्र के सहयागी घटक दल रिमोट कंट्रोल बन चुके है। केन्द्र में पहली बार अराजकता की स्थिति पैदा हुई है भ्रष्टाचार चरम पर है। आम आदमी की पार्टी कही जाने वाली कांग्रेस अब खास लोगों की पार्टी बनकर रह गयी है। जनता पूरी तरह कांग्रेस को नकार चुकी है और आशातीत निगाहों से भारतीय जनता पार्टी की ओर देख रही है हमें कांग्रेस का मुंहतोड़ जवाब देते हुए जनता की आशाओं पर खरा उतना है। उन्होंने कहा कि केन्द्र सरकार मध्यप्रदेश के साथ लगातार भेदभाव कर रही है। मध्यप्रदेश के हक का कोयला, बिजली और खाद केन्द्र सरकार देने में मना करती है क्योंकि यह कांग्रेस की सोची समझी चाल है। उन्होंने मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान को बधाई देते हुए कहा कि जिस तरह केन्द्र सरकार प्रदेश को असहयोग कर रही है उसके बावजदू ग्रामीणों में 13 से 14 घंटा और जिला स्तर पर 24 घंटे बिजली के लिए जो प्रदेश सरकार प्रयास कर रही है वह सराहनीय है। केन्द्र सरकार द्वारा मध्यप्रदेश के साथ किये जा रहे सौतेले व्यवहार और सवा सात करोड़ जनता के साथ किये जा रहे भेदभाव के लिए मध्यप्रदेश भाजपा को केन्द्र के खिलाफ आंदोलन का बिगुल बजाना पड़ेगा।

पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष और सांसद श्री प्रभात झा ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि प्रदेश की उन्नति और खुशहाली की समृद्धि के लिए हम सभी राजा राम सरकार के दरबार में बैठे है। मिशन 2013 के लिए अब हमारे पास समय कम बचा है। तिथि त्योहारों को छोड़कर हमारे पास मात्र 285 दिन बचे है और इन्ही दिनों में इतिहास बनाना है, शिवराज सिंह चौहान के नेतृत्व में सरकार बनाना है और सरकार बनेगी तो इतिहास बनेगा। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने सारे मिथक तोड़े हैं। मिथक तोड़ते हुए सातवें वर्ष पूर्ण कर आठवें वर्ष में प्रवेश किया है। हम निश्चित ही पुनः सरकार बनायेंगे।

प्रदेश भाजपा सरकार की उपलब्धियों को बताते हुए श्री प्रभात झा ने कहा कि हमने ऐसा जननायक पाया है जिसने सामाजिक सुरक्षा की गारंटी दी है। मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान और सभी मंत्रीगण, कार्यकर्ता और समाज के जीवन की सुरक्षा की गारंटी के लिये प्रतिबद्ध है। हमें तीसरी बार अधिक परिश्रम करना है। उन्होंने कहा कि ऊंचाई पर जाने की चिंता बढने के साथ ही परिश्रम भी बढता है। आगामी 2013 हमारे लिये एक नई ऊंचाई लेकर आयेगा और जिसके लिए हमें कठिन परिश्रम करना है। ऐसा कोई भी काम न करें जिससे संगठन की छवि धूमिल हो। कार्यकर्ताओं से आह्वान करते हुए उन्होंने कहा कि आपका एक–एक मिनट तीसरी बार भाजपा की सरकार बनाने की ईंट है। कांग्रेस पर निशाना साधते हुए आने वाले दिनों में कांग्रेस रोजाना प्रायोजित कार्यक्रम करेगी जिसका जवाब हमें जागरूक रहकर देना होगा।

भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय संगठन महामंत्री रामलाल जी ने दो दिवसीय प्रदेश कार्यसमिति की बैठक के समापन सत्र में आगामी 2013 और 2014 में होने वाले चुनावों के बारे में चर्चा करते हुए कहा कि हमारी बूथ रचना और ग्राम नगर शहर केन्द्र को सशक्त और सक्रिय करना है जिसका लाभ हमें आने वाले चुनाव में मिलेगा। बूथ सक्रियता की दिशा में प्रयासरत रहे। संगठन और सरकार को बेहतर गति मिले इसके लिए हम सभी को संपर्क, संवाद और प्रवास करना होगा।

आगामी 2013 और 2014 में होने वाले चुनावों के बारे में चर्चा करते हुए कहा कि हमारी बूथ रचना और ग्राम नगर शहर केन्द्र को सशक्त और सक्रिय करना है जिसका लाभ हमें आने वाले चुनाव में मिलेगा। बूथ सक्रियता की दिशा में प्रयासरत रहे। संगठन और सरकार को बेहतर गति मिले इसके लिए हम सभी को संपर्क, संवाद और प्रवास करना होगा।

समापन सत्र के पूर्व जिलाध्यक्ष नंदकिशोर नापित ने राष्ट्रीय महामंत्री संगठन रामलाल जी का पुष्पगुच्छ से स्वागत किया। संचालन प्रदेश मंत्री तपन भौमिक ने भी स्वागत किया।

समापन सत्र में राष्ट्रीय महामंत्री संगठन श्री रामलाल जी, पूर्व मुख्यमंत्री श्री सुंदरलाल पटवा, प्रदेश अध्यक्ष श्री प्रभात झा मंचासीन थे। मुख्यमंत्री श्री शिवराजसिंह चौहान ने अपने संबोधन में कहा कि मध्यप्रदेश की भाजपा सरकार ने हर क्षेत्र में विकास के नये आयाम गढे है, पिछले 50 वर्षों में जो कांग्रेस सरकारें नहीं कर पायी उसे आठ वर्षों में भाजपा की सरकार ने पूरा किया है। कांग्रेस के शासनकाल में 2003 तक 14787 किलोमीटर की सड़कें बनी थी हमने आठ साल में 73245 कि.मी. सडकों का जाल बुना है। सिंचाई के क्षेत्र में कांग्रेस जहां 7.5 लाख हेक्टेयर तक पहुंची थी वहीं भाजपा की सरकार ने 20 लाख हेक्टेयर की सिंचाई क्षमता के सृजन के लक्ष्य को पूरा किया है जिसे आगे बढ़ा कर 40 लाख हेक्टेयर तक ले जायेंगे। भाजपा सरकार ने प्रदेश में नया प्रकाश और नई ऊर्जा का संचार किया है। कांग्रेस के शासनकाल में 4673 मेगावाट बिजली का उत्पादन होता था। महज आठ वर्षों में भाजपा ने लगभग 9 हजार मेगावाट बिजली के उत्पादन तक पहुंची है। मध्यप्रदेश की सरकार हर क्षेत्र में विकास कर रही है। शिवराजसिंह चौहान ने कहा कि उद्योगों को अगर देखें तो कृषि, बिजली, आदर्श गांव की परिकल्पना, शिक्षा, उद्योग सहित सभी क्षेत्रों में उल्लेखनीय सफलता अर्जित की है। भाजपा सरकार के विकास को लेकर कांग्रेस बौखला गयी है। कांग्रेस अपनी बौखलाहट में भाजपा सरकार की छवि खंडित करने में लगी हुई है। पर हमें सजग रहकर कांग्रेस का मुंहतोड़ जवाब देना है।

समापन सत्र के पूर्व मुख्यमंत्री श्री सुंदरलाल पटवा ने पार्टी पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं से आग्रह किया कि वे प्रदेश सरकार की जनहितैषी नीतियों को जनता की खुशहाली का साधन बनाने के लिए प्राण–पण से जुट जाये और मिशन–2013 की सफलता के लिए सारी शक्ति केन्द्रित करें।

प्रदेश कार्यसमिति बैठक में दो प्रस्ताव, राजनीतिक परिप्रेक्ष्य और गरीबी पर पारित किए गए। मध्यप्रदेश भाजपा महामंत्री श्री नंदकुमार सिंह चौहान ने राजनीतिक प्रस्ताव प्रस्तुत किया, जिसका समर्थन मध्यप्रदेश भाजपा महामंत्री श्रीमती माया सिंह ने किया। सांसद राकेश सिंह ने गरीबी पर प्रस्ताव प्रस्तुत किया, जिसका अनुमोदन मध्यप्रदेश भाजपा मंत्री श्री रामेश्वर शर्मा ने किया। ■

भाजपा सरकार ने देश को किया समर्पित एशिया का सबसे बड़ा सोलर पार्क

Xजरात के मुख्यमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने 19 अप्रैल को एशिया के सबसे बड़े चारणका गुजरात सोलर पार्क सहित राज्य के विभिन्न स्थलों में आज से कार्यरत हुए 600 मेगावाट विद्युत क्षमता की दस सोलर पावर प्लान्ट इकाईयां राष्ट्र को समर्पित की। उन्होंने कहा कि गुजरात समूचे राष्ट्र को ऊर्जाशक्ति प्रदान करने वाला सामर्थ्यवान राज्य बना है।

मुख्यमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने घोषणा की कि सौर विद्युत की महत्ता के मद्देनजर गुजरात सरकार अब छत आधारित रूफ टॉप सोलर पावर पॉलिसी लाने जा रही है। जिसके परिणामस्वरूप आम आदमी भी अपने मकान की छत पर सूर्य ऊर्जा के जरिए बिजली पैदा कर सरकार को बेच सकेगा।

उत्तर गुजरात के रेगिस्तानी इलाके चारणका में 3000 एकड़ बंजर भूमि पर मुख्यमंत्री की प्रेरणा से स्थापित गुजरात सोलर पार्क समग्र एशिया का सबसे बड़ा सोलर पार्क है, जिसका शिलान्यास श्री मोदी ने किया दिसंबर 2010 में किया था। यह सोलर पार्क विंड और सोलर एनर्जी का हाईब्रिड पावर प्रोजेक्ट है। पार्क को विकसित करने के लिए देश–विदेश की 21 अंतरराष्ट्रीय सोलर पावर कंपनियां गुजरात सरकार की सहभागी बनी हैं। खास बात यह है कि महज एक वर्ष के रिकार्ड समय में ही सौर ऊर्जा के जरिए 500 मेगावाट विद्युत उत्पादन करने वाला यह पार्क क्रियान्वित हुआ है।

चारणका की मरुभूमि को स्वर्णिम सूर्यतीर्थ में रूपांतरित करने वाले सोलर पावर डेवलपर्स को अभिनंदन देते हुए मुख्यमंत्री ने गुजरात के 10 जिलों में आज से कार्यरत हुए कुल 600 मेगावाट क्षमता के सोलर पावर प्लांट को चारणका से एक साथ राष्ट्र को समर्पित किया। श्री मोदी ने इस निर्माण में सहभागी बनने के लिए डेवलपर्स कंपनी के पदाधिकारी संचालकों का स्वागत करने के साथ अमेरिका के काउंसिल जनरल पीटर हेश, एशियाई विकास बैंक (एडीबी) तथा इंटरनेशनल फाइनेंस कॉर्पोरेशन (आईएफसी) के वरिष्ठ प्रतिनिधियों का अभिनंदन किया।

गैर परंपरागत और वैकल्पिक ऊर्जा स्त्रोतों की दिशा में राष्ट्र को समर्पित सोलर प्लाांट की इस ऐतिहासिक घटना को विश्व के लिए पथप्रदर्शक करार देते हुए श्री मोदी ने कहा कि यह उपलब्धि न केवल ऊर्जा सुरक्षा का एक अग्रिम कदम है बल्कि आने वाली पीढ़ियों को ऊर्जावान बनाने की दिशा में विश्व के लिए प्रस्तुत एक विजन भी है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि ग्लोबल वार्मिंग और क्लाइमेट चेन्ज के संकटों से घिरी दुनिया को क्लाइमेट जस्टिस की राह दिखाने का हमारा ख्वाब है।चारणका के जरिए गुजरात की यह पहल देश ही नहीं समग्र विश्व को पर्यावरण मैत्रीपूर्ण ऊर्जा की दिशा बतला रही है। उन्होंने कहा कि गुजरात ने देश में सर्वप्रथम सोलर एनर्जी पॉलिसी पेश 2009 में क्रियान्वित की जबकि भारत सरकार इस संबंध में प्राथमिक विचार ही कर रही थी। श्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि प्रारंभ में इस पर प्रति यूनिट 15 रुपये का खर्च आता था, जो अब घटकर 8–50 रुपये हो गया है। उन्होंने भरोसा जताया कि भविष्य में जैसे–जैसे सूर्य ऊर्जा से बिजली उत्पादन बढ़ता जाएगा तब इसकी कीमत प्रति यूनिट 4 रुपये तक पहुंच जाएगी।

श्री मोदी ने कहा कि आज समग्र देश में गुजरात पावर सरप्लस स्टेट बन चुका है बावजूद इसके रिन्युएबल एनर्जी के विकास के लिए वर्तमान में 2000 करोड़ रुपये का निवेश आवंटित किया गया है। यह बतलाता है कि क्लाइमेट चेन्ज के लिए विश्व को वैकल्पिक ऊर्जा की ओर प्रेरित करने की दिशा में गुजरात पथप्रदर्शक बना है। उन्होंने कहा कि केवल दस वर्ष में ही गुजरात ने 4000 मेगावाट विद्युत उत्पादन से छलांग लगाते हुए 18,000 मेगावाट के स्वप्न को साकार किया है।■

ग्राम सुराज से साकार होगा सुशासन का सपना : डॉ. रमन सिंह

N तीसगढ़ के मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह ने कहा है कि ग्राम सुराज अभियान से राज्य में आम जनता के लिए संचालित योजनाओं तथा विकास कार्यक्रमों में और भी ज्यादा गतिशीलता आएगी । सुशासन का सपना भी इस अभियान से

ही साकार होगा। मुख्यमंत्री ने बस्तर (जगदलपुर) जिले के विकासखण्ड मुख्यालय तोकापाल में किसान सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए इस आशय के विचार व्यक्त किए। डॉ. सिंह ने कहा कि यह छत्तीसगढ़ के गांव, गरीब और किसानों सहित ग्रामीण जनता का अपना अभियान है। सरकार तो केवल एक माध्यम है। इस अभियान के जरिए जनता की भावनाओं को समझकर योजनाओं के बेहतर क्रियान्वयन में और नयी योजनाओं के निर्माण में सरकार को भी आसानी होती है। इस अभियान में जनता के लिए चल रही विभिन्न शासकीय योजनाओं का मूल्यांकन भी जनता के बीच होता है।

डॉ. रमन सिंह ने कहा कि प्रदेश सरकार की यह भी मंशा है कि बस्तर के लौह अयस्क का इस्तेमाल स्थानीय स्तर पर इस्पात कारखाना लगाने में हो, ताकि उसका समुचित लाभ यहां की जनता को मिल सके। इसी उद्देश्य से राज्य सरकार की पहल पर नगरनार में राष्ट्रीय खनिज विकास निगम द्वारा इस्पात संयंत्र लगाया जा रहा है। इसमें बस्तर अंचल के हजारों लोगों को प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से भी रोजगार मिलेगा। मुख्यमंत्री ने किसान सम्मेलन में .षि विभाग की अनुदान योजनाओं के तहत 17 किसानों को सिंचाई के लिए स्प्रिंकलर सेट और सिंचाई पम्प, नलकूप खनन के लिए पांच किसानों को अनुदान राशि, पांच किसानों को बिजली से चलने वाली चारा कटाई मशीन और लगभग 100 किसानों को धान तथा रागी के बीजों का वितरण किया। उन्होंने .षि विकास विस्तार समिति, ग्राम भड़िस गांव को ट्रेक्टर और सीड–कम–फर्टीलाईजर ड्रील देकर अपनी शुभकामनाएं दी। इस समिति के 22 सदस्य किसानों को इनका लाभ मिलेगा।

मुख्यमंत्री ने इस अवसर पर ग्राम सुराज अभियान के तहत तोकापाल विकासखण्ड के लिए .षक रथ को हरी झण्डी दिखाकर गांवों के भ्रमण पर रवाना किया। उन्होंने सम्मेलन में विभिन्न शासकीय योजनाओं के प्रचार–प्रसार के लिए तैयार विकास पुस्तिका तथा हल्बी और गोंडी बोलियों सहित हिन्दी निर्मित सी.डी. का विमोचन किया। सम्मेलन में हजारों की संख्या में किसान उपस्थित थे। महिलाओं ने भी उत्साह के साथ सम्मेलन में हिस्सा लिया। किसान सम्मेलन में सात महिलाओं को छत्तीसगढ़ महिला कोष की योजना सात महिलाओं के तहत विभिन्न व्यवसायों के लिए ऋण राशि, 20 किसानों को धान बोनस और तीन किसानों को सिंचाई के लिए विद्युत पम्प हेतु सहायता राशि के चेक प्रदान करते हुए जनश्री बीमा योजना के तहत आधा दर्जन तेन्दूपत्ता संग्रहक परिवारों को बीमा राशि का वितरण किया।

डॉ. रमन सिंह ने किसान सम्मेलन में ग्राम सुराज अभियान के महत्व पर प्रकाश डालते हुए किसानों और ग्रामीणों को राज्य सरकार की विभिन्न योजनाओं की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि यह सातवां ग्राम सुराज अभियान हैं। सरकार और प्रशासन हर साल गर्मियों में एक समयबध्द कार्यक्रम बनाकर छत्तीसगढ़ के प्रत्येक गांव में जनता के बीच पहुंचे और अपनी योजनाओं के बारे में जनता के विचारों को भी सुने, तथा उनकी जरूरतों को पूरा करने का प्रयास करे। यह इस अभियान का मुख्य लक्ष्य है। डॉ. रमन सिंह ने कहा कि प्रदेश सरकार ने इस नये वित्तीय वर्ष से राज्य में सहकारी समितियों और ग्रामीण बैंकों के माध्यम से किसानों को तीन प्रतिशत के स्थान पर मात्र एक प्रतिशत वार्षिक ब्याज पर कृषि ऋण देने का निर्णय लिया है। किसान सम्मेलन को लोकसभा सांसद श्री दिनेश कश्यप सहित अनेक नेताओं और जनप्रतिनिधियों ने सम्बोधित किया। ■

नए प्रदेश भाजपा अध्यक्ष का हुआ जोरदार स्वागत

& laoknnkrk }kjk

Hkkरतीय जनता पार्टी उत्तर प्रदेश के नव नियुक्त प्रदेश अध्यक्ष डॉ0 लक्ष्मीकांत बाजपेई का 16 अप्रैल 2012 को लखनऊ स्थित प्रदेश मुख्यालय पर पदाधिकारियों/कार्यकर्ताओं ने जोरदार स्वागत किया। डॉ0 बाजपेई को कार्यकर्ताओं ने फूल मालाओं से लाद दिया। स्वागत समारोह में डॉ0 बाजपेई को कार्यकर्ताओं की ओर से पगड़ी, साफा और तलवार भेंट की गई। प्रदेश अध्यक्ष नियुक्त होने पर डॉ0 बाजपेई के प्रथम लखनऊ आगमन पर जोरदार स्वागत किया। भाजपा जिंदाबाद व जयश्री राम के गगनभेदी नारों की गूंज दूर तक सुनाई दी। उनके स्वागत में फूल के गोले भी दागे गए। उत्साह से लबरेज कार्यकर्ता रेलवे स्टेशन से गाजे–बाजे के साथ पार्टी कार्यालय पहुंचे। इस बीच डॉ0 बाजपेई ने पं0 दीनदयाल उपाध्याय की स्मृतिका पर पुष्पांजलि अर्पित की। आज सुबह से गाजियाबाद, अलीगढ़, इटावा, कानपुर स्टेशनों पर कार्यकर्ता अपने अध्यक्ष के स्वागत में हजारों की संख्या में उमड़ पड़े।

स्वागत समारोह को संबोधित करते हुए निवर्तमान प्रदेश अध्यक्ष सूर्य प्रताप शाही ने कहा कि ईश्वर डॉ0 बाजपेई को इतनी शक्ति दे कि उ0प्र0 में भाजपा ने जो यश खोया है वह पुनः प्राप्त हो सके और आने वाली चुनौतियों को उनके नेतृत्व में हम मुकाबला कर सकें। उन्होंने कहा कि अध्यक्ष की जिम्मेदारी के कारण यदि मेरे व्यवहार से किसी कार्यकर्ता को कोई दुख पहुंचा हो तो वह मुझे यहीं वापस कर दे। अब मैं एक साधारण कार्यकर्ता की तरह डॉ0 बाजपेई जी के साथ काम करता रहूंगा तथा उनका पूरा सहयोग करूंगा।

राष्ट्रीय मंत्री संतोष गंगवार ने कहा कि यदि दो–तीन महीने के अंदर निकाय चुनाव हो जाएं तो पार्टी के पक्ष में सकारात्मक वातावरण बनेगा। नेता विधान मंडल दल हुकुम सिंह ने कहा कि डॉ0 बाजपेई सशक्त विपक्ष की भूमिका निभाते आए हैं। अब वह सदन और सदन से बाहर पूरे प्रदेश में जनहित के लिए संघर्ष करेंगे। पूर्व प्रदेश अध्यक्ष डॉ0 रमापति राम त्रिपाठी ने कहा कि भाजपा कार्यकर्ता आधारित पार्टी है उन्हीं कार्यकर्ताओं में से एक आदर्श कार्यकर्ता का चयन हुआ है। इसके लिए केन्द्रीय नेतृत्व धन्यवाद का पात्र है। डॉ0 बाजपेई के नेतृत्व में हम विधान सभा के भीतर और सड़कों पर संघर्ष करके भाजपा को आगे बढ़ाएंगे। पूर्व नेता विधानमंडल दल ओम प्रकाश सिंह ने कहा कि डॉ0 बाजपेई गहराई से कमियों की चिंता करते हैं व उन्हें दूर करने के लिए संकल्पित रहते हैं। उन्होंने भगवान विश्वनाथ से प्रार्थना किया कि डॉ0 बाजपेई के नेतृत्व में भाजपा 2014 में जीत की ओर अग्रसर हो।

भाजपा के वरिष्ठ नेता व राष्ट्रीय उपाध्यक्ष कलराज मिश्र ने स्वागत समारोह को संबोधित करते हुए कहा कि डॉ0 बाजपेई पुराने कार्यकर्ता हैं। सदैव संगठन को जोड़ने का काम किए हैं। ईमानदारी व प्रामाणिकता उनकी पहचान है। संगठन को सुचारू रूप से चलाने की कला इनके अंदर मौजूद है। प्रदेश सरकार की कार्यशैली पर प्रहार करते हुए श्री मिश्र ने कहा कि पूत का पांव पालने में ही दिखाई देते हैं। वर्तमान सपा सरकार द्वारा पूरे प्रदेश को साम्प्रदायिकता की आग में झोंकने की साजिश हो रही है। सत्ता मिलते ही जनता को नहीं बल्कि विशेष सम्प्रदाय को धन्यवाद दिया गया। तीस हजार रू0 देने की घोषणा विशेष सम्प्रदाय की बच्चियों को की गई। एडिशनल एडवोकेट जनरल, मुख्य सचिव तथा रॉ विभाग के सचिव जैसे महत्वपूर्ण पद सम्प्रदाय विशेष को दिए गए। 2007 के ब्लास्ट में बंद आतंकियों को छोड़ने की बात हो रही है। पूरे प्रदेश को किधर ले

जाना चाहते हैं, यदि यही माहौल रहा तो भाजपा एक बड़ा संघर्ष छेड़ने में पीछे नहीं रहेगी।

भाजपा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष विनय कटियार ने कहा कि प्रदेश सरकार का इंजन नया है लेकिन डिब्बे पुराने हैं। हत्या, लूट, बलात्कार का दौर शुरू हो गया है। नगर निकाय चुनाव से सपा भाग रही है। डॉ0 बाजपेई एक जुझारू व्यक्ति हैं उनके नेतृत्व में पार्टी आगामी चुनाव में अवश्य ही कमल खिलाएगी। भाजपा जातिवाद पर नही रामवाद पर काम करती है।

प्रदेश अध्यक्ष डॉ0 लक्ष्मीकांत बाजपेई ने इस अवसर पर कहा कि प्रदेश एवं केन्द्रीय नेतृत्व ने मेरे ऊपर विश्वास करके जो गुरूतर दायित्व सौंपा है, पूरे प्रदेश के कार्यकर्ताओं के सहयोग के बल पर मैं उसे पूरा करने का प्रयास करूंगा। उन्होंने कहा कि बहुजन समाज पार्टी स्थानीय निकाय चुनाव से भाग गई। आशा थी कि वर्तमान प्रदेश सरकार यह चुनाव कराएगी लेकिन वह इसे टालने के लिए सर्वोच्च न्यायालय का सहारा ले रही है। भाजपा के अध्यक्ष होने के नाते मेरी मांग है कि स्थानीय निकाय चुनाव कराकर लोकतंत्र की निचली इकाई को काम करने का अवसर दिया जाए। डॉ0 बाजपेई ने कहा कि जब प्रदेश की मुख्यमंत्री के संसदीय निर्वाचन क्षेत्र में कानून व्यवस्था की हालत इतनी जर्जर है तो बाकी प्रदेश की स्थिति क्या होगी। उन्होंने इधर बीच कन्नौज में हुए अपहरण, लूट आदि की घटनाओं का विस्तार से वर्णन किया। उन्होंने कहा कि सरकार जनता की जितनी अनदेखी करेगी उतना ही संघर्ष का अवसर मिलेगा। आप संघर्ष की शुरूआत करें, भाजपा नेतृत्व हमेशा आपके साथ खड़ा रहेगा। ■

डॉ. अंबेडकर महान राष्ट्रवादी और विचारक थे : प्रभात झा

Hkkरतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष, सांसद श्री प्रभात झा ने संविधान शिल्पी डॉ. भीमराव अंबेडकर जयंती पर श्रद्धा–सुमन अर्पित करते हुए कहा कि बाबा साहेब महान राष्ट्रवादी थे। सामाजिक समरसता के प्रति उनकी प्रतिबद्धता का इससे बड़ा प्रमाण क्या होगा कि उन्होंने अंग्रेजों की साम्प्रदायिक आधार पर निर्वाचन की साजिश को अमान्य करते हुए भारतीय समाज में विघटन के षड्यंत्र को हमेशा के लिए विफल कर दिया। श्री प्रभात झा ने प्रदेश कार्यालय में डॉ. अंबेडकर की प्रतिमा पर पुष्पाजंलि अर्पित करने के पश्चात बोर्ड ऑफिस चौराहा पर समारोहपूर्वक बाबा साहेब की प्रतिमा पर फूल–मालाएं अर्पित की।

श्री प्रभात झा ने बताया कि धर्म आधारित आरक्षण कोटा की मांग का बाबा साहेब ने हमेशा विरोध किया। आज जो नेता रामविलास पासवान हों, अथवा मायावती, धर्म आधारित कोटे की मांग करके बाबा साहेब के आदर्शों का निरादर कर रही हैं। उन्होंने कहा कि डॉ. अंबेडकर में अच्छी राजनैतिक दृष्टि थी और वे समाज को समरसता के धागों से बंधा हुआ देखना चाहते थे। 1932 में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के साथ उनकी इसी बात पर पुणे में सहमति बनी थी।

श्री प्रभात झा ने बताया कि बाबा साहेब अंबेडकर पुणे में 1939 में अचानक राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ के शिविर में पहुंच गये। उनके द्वारा तलाश किये जाने पर भी उन्हें शिविर में जाति–पांति के भेदभाव का जब कोई चिह्न नहीं मिला तो उन्होंनें आरएसएस की सामाजिक समरसता की भूरि–भूरि बधायी दी और कहा कि उन्हें संघ जैसे राष्ट्रीय सांस्कृतिक संगठन पर गर्व है। उन्होंने बताया कि डॉ. अंबेडकर हिन्दुत्व के विरोधी नहीं थे। अलबत्ता उन्होंने बौद्ध धर्म ग्रहण करके

हिन्दुत्व के साथ जुड़ी विकृतियों की ओर ध्यान आकृष्ट किया था। वे महान सुधारवादी थे। अंबेडकर जंयती पर भोपाल जिला नगर में 70 वार्डों में डॉ. अंबेडकर को श्रद्धा–सुमन अर्पित किये गये। बोर्ड ऑफिस चौराहा पर आयोजित समारोह में पूर्व मुख्यमंत्री एवं सांसद कैलाश जोशी, वरिष्ठ मंत्री उमाशंकर गुप्ता, प्रदेश प्रवक्ता, विधायक विश्वास सारंग, पार्टी के संवाद प्रमुख डॉ. हितेष वाजपेयी, प्रदेश कार्यालय मंत्री आलोक संजर, भोपाल नगर जिला अध्यक्ष आलोक शर्मा, संगठन मंत्री अमरदीप मौर्य, अजा मोर्चा के प्रदेश कार्यालय मंत्री रामस्वरूप शुक्रवारे, अनिल अग्रवाल, सत्यार्थ अग्रवाल, सुनील मोरे, महेश शर्मा, वंदना जाचक, भाजयुमो जिलाध्यक्ष कुलदीप खरे, रामू गजभिये सहित सैकड़ों पार्टी व मोर्चा के कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। प्रदेश के सभी जिलों में महिला मोर्चा द्वारा गरीब बस्तियों में आयोजित समारोह में मिष्ठान्न वितरण किया गया। महिला मोर्चा की प्रदेश अध्यक्ष नीता पटैरिया ने छिंदवाड़ा में समारोह में भाग लिया।■